04 - अच्छी नींद सोने के लिए घोड़े कहां से लाऊं

05 - शिल्प संपन्नता को भी दर्शाते हैं भारतीय ग्रंथ

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 24 अगस्त, 2025

06 - भूमिपूजन के डेढ़ से दो माह बाद भी चौराहों के चौड़ीकरण औरप्त...

07 - मां के सशक्त किरदार वाली ये यादगार फ़िल्में

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 344, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

फोटो: गिरीश शर्मा

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

हम एस्ट्रोनॉट पूल बना रहे, युवा भी इससे जुड़ें

● नेशनल स्पेस डे पर बोले पीएम मोदी, दी शुभकामनाएं

कहा- आज देश में 350 से ज्यादा स्पेस स्टार्टअप्स हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को नेशनल स्पेस डे की शुभकामनाएं देते हुए देश की स्पेस पावर और मिशन गगनयान का जिक्र किया। उन्होंने कहा- भारत अपना एस्ट्रोनॉट पूल भी तैयार कर रहा है। मैं युवाओं से इस पूल से जुड़ने की अपील करता हूं। मोदी ने कहा कि इसरो ने युवाओं की स्पेस फील्ड में रुचि बढ़ाने के लिए भारतीय अंतरिक्ष हैकथॉन और रोबोटिक्स चैलेंज की पहल की है। ये सराहनीय है। इस बार स्पेस डे की थीम आर्यभट्ट से गगनयान तक है। इसमें अतीत का आत्मविश्वास भी है और भविष्य का संकल्प भी है। उन्होंने कहा, स्पेस सेक्टर में एक के बाद एक माइलस्टोन्स गढ़ना देशवासियों का स्वभाव बन गया है। दो साल पहले भारत चंद्रमा के साउथ पोल पर पहुंचने वाला पहला देश बना और इतिहास रचा। इस मौके पर इसरो ने दिल्ली में भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन का मॉडल लॉन्च किया। इसका पहला हिस्सा 2028 में शुरू होगा और पूरा स्टेशन 2035 तक बनकर तैयार हो जाएगा। इसरो ने चंद्रयान-4 और वीनस ऑर्बिटर मिशन पर भी विचार करना शुरू कर दिया है। दरअसल, भारत 23 अगस्त 2023 को चांद पर उतरने वाला चौथा देश बना था। पीएम मोदी ने इस दिन को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में घोषित किया, जिसके बाद हर साल 23 अगस्त को भारत अपना नेशनल स्पेस डे मनाता है। पीएम ने कहा- एक समय था जब स्पेस सेक्टर को बेड़ियों में जकड़ दिया गया था। हमने उन बेड़ियों को तोड़ा और प्राइवेट सेक्टर को स्पेस सेक्टर में आने की इजाजत दी और आज देश में 350 से ज्यादा स्पेस स्टार्टअप्स हैं। जल्द ही प्राइवेट सेक्टर द्वारा बनाया गया पहला माड्यूल भी लॉन्च होगा। भारत की पहली प्राइवेट कम्युनिकेशन सैटेलाइट भी बनाई जा रही है।

भोपाल से जबलपुर तक बनेगा ग्रीन फील्ड हाईवे

गडकरी ने किया एमपी के सबसे लंबे फ्लाईओवर का लोकार्पण

मध्यप्रदेश में बनाया जाएगा टाइगर कॉरीडोर

भोपाल/जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश के लिये शनिवार का दिन ऐतिहासिक रहा। इस दिन केन्द्रीय परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 4250 करोड़ से अधिक की लागत वाली 174 किलोमीटर लंबी 9 सड़क परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। इनमें देश का सबसे बड़ा दमोह नाका-रानीताल-मदनमहल-मेडिकल रोड फ्लाय ओवर भी शामिल है। जबलपुर के महानद्दा में आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी ने मध्यप्रदेश के लिये 60 हजार करोड़ से अधिक लागत की विभिन्न सड़क परियोजनाओं की घोषणाएँ भी की।

जबलपुर के रानी दुर्गावती फ्लाई ओवर के लिए देश में पहली बार 1200 करोड़ रुपए का सेंट्रल रोड फंड मंजूर- केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री गडकरी ने कहा कि देश को 2047 तक शक्तिशाली और विश्वगुरु बनाने के संकल्प के साथ कार्य जारी है। भारत अभी 22 लाख करोड़ रुपए का ईंधन आयात कर रहा है। लेकिन हाइड्रोजन हमारे भविष्य का ईंधन है। हाइड्रोजन के बल पर हम ऊर्जा का निर्यात करेंगे, हमारा अन्नदाता, ऊर्जा उत्पादक होगा और वह समृद्ध भी होगा। देश में केवल स्मार्ट शहर नहीं, स्मार्ट विलेज भी बनेंगे। गांव का युवा गांव में ही रोजगार पाए, यही हमारा सपना है। मध्यप्रदेश कृषि प्रधान राज्य है। देश में 2000 अमृत सरोवर बने हैं, जिनमें से 109 मध्य प्रदेश के हैं। इनसे निकली मिट्टी सड़कों के निर्माण में उपयोग की गई और मिट्टी निकालने से बनीं संरचनाओं को जल संचय कर आसपास के क्षेत्रों का भूजल स्तर बढ़ाने के लिए तालाब के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

साढ़े 4 घंटे में पहुंचेंगे ग्वालियर से दिल्ली

केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी ने कहा कि मध्यप्रदेश के लिए 3 लाख करोड़ रुपए की सड़क परियोजनाएं स्वीकृत की हैं, जिनमें से 75 हजार करोड़ के कार्य पूरे किए हैं और 65 हजार करोड़ के कार्य प्रगति पर हैं। आगामी समय में डेढ़ लाख करोड़ रुपए लागत से करीब ढाई हजार किलोमीटर के कार्य डीपीआर के लिए रखे हैं। मध्यप्रदेश में 33 हजार करोड़ रुपए की लागत से 5 ग्रीन फील्ड इकोनॉमिक कॉरिडोर का निर्माण किया जा रहा है। इंदौर से हैदराबाद कॉरिडोर पर ओंकारेश्वर के पास नर्मदा नदी पर एक भव्य ब्रिज का निर्माण किया गया है। जल्द ही इसका उद्घाटन किया जाएगा। उज्जैन-गरोठ 4 लेन ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस-वे, भोपाल से कानपुर 440 किलोमीटर लंबा 4 लेन इकोनॉमिक कॉरिडोर बनने पर 15 घंटे की यात्रा 8 घंटे में पूरी होगी। आगरा-ग्वालियर एक्सप्रेस-वे का भूमिपूजन भी जल्द होगा। साढ़े 4 घंटे में ग्वालियर से दिल्ली पहुंचेंगे। दिल्ली से मुंबई के बीच बनाए जा रहे एक्सप्रेस वे में मध्यप्रदेश में 245 किलोमीटर का हिस्सा बनकर पूरा हो गया है। मुंबई में भी कार्य अंतिम चरण में है।

सुप्रभात

सुबह खिड़की खोली ही थी
कि हवा के महकते झोंके के साथ
मधुमालिनी की एक डाल
उचक कर चली आई
खिड़की के भीतर
ऐसा लगा जैसे उदास कमरे में
अचानक गूंज उठी हो
कोई मासूम सी हंसी
शुभ्र, स्निग्ध और पारदर्शी

ईश्वर की हंसी
शायद ऐसी ही होती होगी।

– ध्रुव गुप्त

पंजाब में एलपीजी टैंकर में ब्लास्ट, घर-दुकानें जलीं

मरने वालों की संख्या 4 हुई

होशियारपुर (एजेंसी)। पंजाब के होशियारपुर में शुक्रवार रात सब्जी से भरी पिकअप (छोटा ट्रॉला) के टक्कर मारने से एलपीजी टैंकर में ब्लास्ट हो गया। इसके बाद उसमें आग लग गई। गैस के रिसाव से आग ने आसपास के इलाके को अपनी चपेट में ले लिया। इसमें 15 दुकानें और 4 घर जल गए। एसएसपी गुरसिमरनजीत कौर ने कहा कि अभी तक 4 लोगों की मौत हो चुकी है। 30 लोग घायल हैं। कुछ घायल सिविल अस्पताल में, तो कुछ प्राइवेट अस्पताल में भर्ती हैं।

असम में नहीं बनेगा 18+ उम्र वालों का नया आधार

● डेमोक्रेटिक फ्रंट के नेता बोले-यह है तुगलकी फरमान

दिसपुर (एजेंसी)। असम में 18 साल से ज्यादा उम्र के लोगों का नया आधार कार्ड नहीं बनेगा। असम कैबिनेट ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और चाय बागान समुदायों को छोड़कर सभी लोगों के लिए अगले एक साल तक आधार कार्ड जारी करने पर रोक लगाने की घोषणा की है। इस घोषणा को ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के नेता रफीकुल इस्लाम ने तुगलकी फरमान बताया है और कहा है कि सरकार लोगों को वोट देने से रोकना चाहती है। इस्लाम ने कहा कि अगर कोई विदेशी आता है, तो उसे हिरासत में लेकर उसके देश वापस भेज देना चाहिए। उसे आधार कार्ड क्यों दें, उसका नाम मतदाता सूची में क्यों जोड़ें और उसे नागरिकता क्यों दें।

पटना में ट्रक-ऑटो में टक्कर, 9 लोगों की मौत

● विधायक बोले- सीमेंट फैक्ट्री की गाड़ी ने उड़ाया ● सड़क पर लाशों को पकड़कर रोते रहे लोग, चार लोग घायल

पटना (एजेंसी)। पटना में सड़क हादसे में 9 लोगों की मौत हो गई है। 4 लोग घायल हुए हैं। एक्सीडेंट शनिवार सुबह शाहजहांपुर के दनियावां हिलसा स्टेट हाईवे-4 पर सिगरियावा स्टेशन के पास हुआ। ट्रक-ऑटो में हुई आमने-सामने की टक्कर में 7 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 2 ने अस्पताल में दम तोड़ा। मरने वालों में 8 महिलाएं और ऑटो ड्राइवर शामिल हैं। मृतकों में मां-बेटी भी है। दनियावां थाना अध्यक्ष ने बताया, मृतक नालंदा जिले के हिलसा के मलावा के रहने वाले थे। घायलों की हालत चिंताजनक बनी हुई है। सभी को इलाज के लिए एम्स भेजा गया है। प्रत्यक्षदर्शी राजीव रंजन ने बताया, सुबह 6 बजे के आसपास की घटना है। ट्रक वाले ने ऑटो को जोरदार टक्कर मारी। ऑटो से सभी गंगा स्नान के लिए जा रहे थे। 8 से 9 लोगों की मौत हुई है। 4-5 घायल हैं। हादसा सीमेंट फैक्ट्री के पास हुआ। स्थानीय लोगों ने बताया कि ट्रक सीमेंट फैक्ट्री का ही था। हादसे के बाद ट्रक कंपनी के अंदर चला गया। गुस्साए लोगों ने सड़क जाम कर दिया है। मौके पर फैक्ट्री संचालक को बुलाने की मांग कर रहे हैं। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 24 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

जेपीसी तमाशा टीएमसी का कोई मेंबर नहीं होगा

ममता की पार्टी ने पीएम और सीएम को हटाने वाले बिल से बनाई दूरी

कोलकाता (एजेंसी)। ममता बनर्जी की पार्टी टीएमसी ने गिरफ्तार पीएम-सीएम और मंत्रियों को हटाने वाले बिल समेत तीन विधेयकों पर विचार के लिए बनाई गई जेपीसी को तमाशा बताया है। पार्टी ने कहा कि है वह इसमें कोई सदस्य नहीं भेजेगी। सरकार ने मानसून सत्र में केंद्र शासित प्रदेश सरकार (संशोधन) विधेयक 2025,

संविधान (एक सौ तीसवां संशोधन) विधेयक 2025 और जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) विधेयक 2025 को पेश किया था। दोनों सदनों ने इन विधेयकों को एक जॉइंट पार्लियामेंट्री कमेटी को भेजने का प्रस्ताव पारित किया, जिसमें लोकसभा के 21 और राज्यसभा के 10 सदस्य शामिल होंगे। समिति शीतकालीन सत्र में अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। हालांकि लोकसभा में, जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह विधेयक पेश करने के लिए आगे बढ़े, तो हंगामा मच गया, विधेयकों की प्रतियां फाड़कर अमित शाह पर फेंकी गई थीं। इन बिलों के मुताबिक कोई भी व्यक्ति गिरफ्तार होकर जेल से प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, केन्द्र या राज्य सरकार के मंत्री के रूप में शासन नहीं चला सकता है। इस बिल में आरोपित राजनेता को गिरफ्तारी के 30 दिन के अंदर कोर्ट से जमानत लेने का प्रावधान भी दिया गया है।

सवा 2 फीट पानी आते ही छलक उठेगा बड़ा तालाब

केरवा डैम 9, कलियासोत 10 और कोलार को 15 फीट पानी की जरुरत

भोपाल (नप्र)। भोपाल की लाइफ लाइन बड़ा तालाब अब सिर्फ सवा 2 फीट ही खाली है। इतना पानी आते ही बड़ा तालाब छलक उठेगा। शनिवार सुबह तक 1664.55 फीट पहुंच गया। केरवा, कलियासोत और कोलार डैम में भी पानी का लेवल बढ़ा है।

बता दें कि पिछले कुछ दिनों से सीहोर जिले में तेज बारिश हो रही है। इस वजह से कोलांस नदी उफान पर रही और यह पानी सीधे बड़ा तालाब में पहुंचा। इस वजह से बड़ा तालाब में पानी का लेवल बढ़ रहा है। बड़ा तालाब के साथ कोलार, केरवा और कलियासोत डैम में भी पानी की बढ़ोतरी हुई है। हालांकि, ये सभी पिछले साल जुलाई में ही भर गए थे, लेकिन इस बार अगस्त सूखा रहा। ज्यादा बारिश नहीं होने की वजह से भदभदा, केरवा, कलियासोत और कोलार डैम के गेट नहीं खुल सके।

बड़ा तालाब भरने से 2 डैम के खुलते हैं गेट

कोलांस नदी जब उफान पर रहती है तो बड़ा तालाब में पानी जमा होता है। जब बड़ा तालाब पूरा भर जाता है तो भदभदा डैम के गेट खोले जाते हैं। यह पानी सीधे कलियासोत डैम में पहुंचता है। जिससे इस डैम का लेवल भी बढ़ जाता है और फिर इसके गेट भी खुल जाते हैं।

भोपाल के इन डैमों में इतना पानी

कोलार डैम- इसका वाटर लेवल 1516.40 फीट है। अभी इसमें 1501.14 फीट पानी जमा है। इस हिसाब से यह काफी खाली है। कोलार डैम से ही भोपाल शहर के 40 प्रतिशत हिस्से में पानी की सप्लाई की जाती है। पिछली बार जुलाई में इसके गेट खोलने पड़े थे।

केरवा डैम- कुल 1673 फीट वाले केरवा डैम में अब तक 1664.50 फीट पानी आ चुका है। तेज बारिश होने के बाद डैम में पानी का लेवल बढ़ जाएगा।

कलियासोत डैम- डैम का अभी वाटर लेवल 1648.85 फीट है। इसकी कुल जलभराव क्षमता 1659.02 फीट है। इसके चलते डैम अभी भी करीब 10 फीट खाली है। बड़ा तालाब के गेट खुलने पर कलियासोत डैम में पानी आएगा और गेट खुल जाएंगे।

3 लाख आबादी की प्यास बुझाता है बड़ा तालाब

बड़ा तालाब को शहर की लाइफ लाइन कहा जाता है। इसकी वजह यह वाटर लेवल तो बेहतर रखता ही है। साथ में बड़ी आबादी की प्यास भी बुझाता है। बड़ा तालाब से हर दिन पुराने शहर समेत बैरागढ़ (संत हिरदाराम नगर) समेत आसपास के इलाकों की 3 लाख से ज्यादा आबादी को पानी की सप्लाई की जाती है। 20त्न से ज्यादा इलाकों में पानी पहुंचता है। बड़ा तालाब से हर रोज 25 एमजीडी (मिलियन गेलन पानी प्रतिदिन) सप्लाई होता है। इसकी कुल जलभराव क्षमता 1666.80 फीट है।

त्योहारों को देखते हुए रेलवे की बड़ी सौगात

380 गणपति स्पेशल ट्रेन चलाने का ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। त्योहारी सीजन को देखते हुए भारतीय रेलवे यात्रियों और श्रद्धालुओं को सुगम और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने के लिए 380 गणपति स्पेशल ट्रेन चलाने का एलान किया है। रेलवे की ओर से ये अब तक का सबसे बड़ा एलान है, इससे पहले साल 2024 में 358 और 2023 में 305

गणपति स्पेशल ट्रेन चलाई गई थीं। महाराष्ट्र और कोंकर क्षेत्र में त्योहारी सीजन में यात्रा की भारी मांग को देखते हुए सेंट्रल रेलवे ने सबसे ज्यादा 296 ट्रेनें चलाएगा। वेस्टर्न रेलवे 56 गणपति स्पेशल ट्रेन, कोंकण रेलवे (केआरसीएल) 6 ट्रेन और साउथ वेस्टर्न रेलवे 22 ट्रेने चलाएगा। कोंकण रेलवे पर चलने वाली गणपति स्पेशल ट्रेनों के स्टॉपेज की योजना कोलाड, इंदापुर, मानगांव, गोरेगांव रोड, वीर, सापे वार्मने, करंजडी, विन्हेरे, दीवानखावटी, कलांबनी बुद्रुक, खेड़, कावली, सिंधुदुर्ग में बनाई गई है।

भारत-चीन के बीच लिपुलेख दर्रे से होगा रुपए-युआन में व्यापार

- पहले सामान के बदले सामान का लेन-देन होता था, यहां मनी एक्सचेंज भी खुलेगा

देहरादून (एजेंसी)। भारत और चीन ने उत्तराखंड के लिपुलेख दर्रे से फिर व्यापार शुरू करने पर सहमति जताई है। यह फैसला 18-19 अगस्त को चीनी विदेश मंत्री वांग यी की भारत यात्रा के दौरान हुआ। लिपुलेख के साथ शिपकी ला और नाथु ला दर्रों से भी कारोबार बहाल करने का फैसला लिया गया है। हिमालय के तीन दर्रों से शुरू होने जा रहा भारत-चीन व्यापार पहली बार पूरी तरह सड़क के जरिए होगा। सबसे अहम यह है कि व्यापार अब भारतीय रुपए और चीनी युआन में होगा। अब तक यह 'वस्तु विनिमय' आधारित था। तिब्बत से व्यापारी नमक, बोराक्स, पशु उत्पाद, जड़ी-बूटियां और स्थानीय सामान बेचने आते हैं, जबकि भारतीय व्यापारी बकरी, भेड़, अनाज, मसाले, गुड़, मिश्री,

गेहूं वहां ले जाते हैं। हालांकि, नेपाल ने इस समझौते पर आपत्ति जताई। उसका कहना है कि लिम्पियाधुरा, लिपुलेख और कालापानी उसके क्षेत्र का हिस्सा हैं।

विधानसभा चुनाव से पहले बढ़ी तेजस्वी यादव की मुश्किलें

- पीएम के खिलाफ अभद्र टिप्पणी करने पर दो राज्यों में एफआईआर

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव से ठीक पहले नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव की मुश्किलें बढ़ गई हैं। दरअसल उन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ अभद्र टिप्पणी करने का आरोप लगाते हुए उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में अलग-अलग केस दर्ज किए गए हैं। दरअसल, आने वाले कुछ महीनों में बिहार विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। सभी राजनीतिक दल अपने-अपने स्तर पर तैयारी में जुटे हैं और नेताओं के बीच आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला तेज हो गया है। तेजस्वी यादव लगातार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्र सरकार को निशाना बना रहे हैं।

मां ने तीन बच्चों समेत खाया जहर, तीन की मौत

पति से गुटखा खाने को लेकर विवाद; एक बच्चा सतना जिला अस्पताल में भर्ती

सतना (नप्र)। मध्यप्रदेश की सीमा से लगे उत्तर प्रदेश के इटवां डुडैला गांव में शनिवार की शाम एक मां ने अपने 3 बच्चों समेत जहर खा लिया। इसमें से तीन की मौत हो गई। गंभीर हालत में चारों को परिजन सतना जिले के मझगवां अस्पताल लेकर आए। उपचार के दौरान एक साल के मासूम की मौत हो गई। जबकि मां एवं 2 बच्चों को प्राथमिक इलाज के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। उन्हें उपचार के लिए जिला अस्पताल ले जाया जा रहा था। तभी रास्ते में मां और एक अन्य बेटी ने भी दम तोड़ दिया। घटना मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित गांव की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। प्राथमिक जानकारी के अनुसार, गुटखा खाने को लेकर पति से विवाद हुआ था। जानकारी के अनुसार, मां झुमकी (32) ने बेटी बुलबुल (1), चंद्रमा (3) और दीपचंद्र (4) के साथ जहर खाया है। इसमें से केवल दीपचंद्र को छोड़कर बाकियों की मौत हो गई।

भोपाल के प्रख्यात जागीरदार मुताहिर मोहम्मद खान का निधन

बड़ा बाग कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक

भोपाल (नप्र)। राजधानी की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान माने जाने वाले प्रख्यात जागीरदार तथा सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता (पीएचई) मुताहिर मोहम्मद खान का शुक्रवार देर रात निधन हो गया। वे 85

वर्ष के थे। निधन का कारण हृदयाघात (हार्ट अटैक) बताया गया। मुताहिर मोहम्मद खान का निवास प्रोफेसर कॉलोनी में था। उनका निधन रात 12-30 बजे हुआ। वे अपने सरल, सौम्य और मिलनसार व्यक्तित्व के कारण शहर के हर वर्ग में सम्मानित थे। इंजीनियरिंग सेवा में रहते हुए उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण प्रोजेक्टों का सफल नेतृत्व किया और सेवानिवृत्ति के बाद भी समाजसेवा से जुड़े रहे।

शनिवार दोपहर उन्हें भोपाल टॉकीज के समीप स्थित बड़ा बाग कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक किया गया। इसमें बड़ी संख्या में शहर की जानी-मानी हस्तियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, रिश्तेदारों और आम नागरिकों ने शिरकत की। शहरवासियों ने कहा कि वे ईमानदार अधिकारी , सादगी और इंसानियत की मिसाल भी थे।

ईडी के शिकंजे में कांग्रेस एमएलए केसी वीरेन्द्र

- 12 करोड़ कैश और 6 करोड़ की ज्वैलरी मिली
- कर्नाटक में कोहराम, दबोचे गए चित्रदुर्ग विधायक

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक से कांग्रेस विधायक केसी वीरेंद्र को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शनिवार को सिक्किम से गिरफ्तार किया। वीरेंद्र की गिरफ्तारी प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट के तहत हुई है। उन पर अवैध ऑनलाइन और ऑफलाइन सट्टेबाजी का आरोप है। ईडी ने शुक्रवार को वीरेंद्र के ठिकानों पर छापा मारा था। छापेमारी के दौरान जांच एजेंसी को 12 करोड़ रुपए कैश और 6 करोड़ की गोल्ड ज्वैलरी मिली। साथ ही एक करोड़ की फॉरेन करेंसी भी बरामद की है। चार गाड़ियां भी जब्त की गई हैं। केसी वीरेंद्र कर्नाटक की चित्रदुर्ग विधानसभा में विधायक हैं। बताया गया है कि विधायक की गोवा में कसीनो कारोबार में हिस्सेदारी है। वे करीब पांच कैसिनो

के मालिक हैं, जिसमें फेमस पप्पीज कसीनो भी शामिल है। गिरफ्तारी से पहले ईडी ने विधायक और उनके सहयोगियों के 30 ठिकानों पर छापेमारी की थी। इस कार्रवाई के दौरान एजेंसी ने लगभग 12 करोड़ रुपये की नकदी, 6 करोड़ रुपये मूल्य के सोने के गहने, लगभग 10 किलो चांदी और चार लग्जरी वाहन जब्त किए। साथ ही, ईडी ने 17 बैंक खाते और दो लॉकर फ्रीज कर दिए। वीरेंद्र के भाई के.सी. नागराज और बेटे पृथ्वी एन. राज के ठिकानों से संपत्ति से जुड़े कई दस्तावेज भी बरामद हुए। कर्नाटक में पिछले 8 दिनों में अब तक दो कांग्रेस विधायक शिकंजे में आ चुके हैं। इससे पहले 14 अगस्त को ईडी ने विधायक सतीश कृष्ण सैल के घर से 1.41 करोड़ रुपए जब्त किए थे।

अनिल अंबानी के ठिकानों पर सीबीआई की रेड

एफआईआर भी दर्ज हुई, लोन-फ्रॉड का है मामला

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीबीआई ने अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस कम्युनिकेशंस के खिलाफ 2,929 करोड़ रुपए के बैंक फॉड मामले में केस दर्ज किया है। सीबीआई ने मुंबई में

रिलायंस कम्युनिकेशन लिमिटेड के ऑफिस और अनिल अंबानी के घर पर शनिवार (23 अगस्त) को छापेमारी भी की है। यह फ्रॉड स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से जुड़ा है। केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने लोकसभा में लिखित जवाब में कहा था कि सीबीआई ने इस मामले में सेबी में शिकायत दर्ज करने की प्रोसेस भी शुरू की है। इसके अलावा बैंक ने अनिल अंबानी के खिलाफ व्यक्तिगत दिवालिया कार्यवाही भी शुरू की है, जो मुंबई में पेंडिंग है। इससे पहले 23 जुलाई को भी ईडी ने अनिल अंबानी के रिलायंस ग्रुप से जुड़े 35 से ज्यादा ठिकानों पर छापेमारी की थी।

कुछ ऐसी शर्तें जिससे भारत नहीं कर सकता समझौता

अमेरिका के साथ रिश्तों पर एस जयशंकर की खरी-खरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और अमेरिका के बीच ट्रेड डील को लेकर तनाव चल रहा है। भारत, रूस से लगातार कच्चा तेल खरीद रहा है। इस बीच, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने साफ कर दिया है कि भारत की नीतियां उसके राष्ट्रीय हित में होंगी। इकोनॉमिक टाइम्स वर्ल्ड लीडर्स फोरम 2025 में विदेश मंत्री जयशंकर ने स्पष्ट संदेश दिया। उन्होंने कहा कि भारत, रूस से कच्चा तेल अपने राष्ट्रीय हित और वैश्विक हित दोनों के लिए खरीद रहा है। उन्होंने स्वीकार किया कि ट्रंप प्रशासन के साथ व्यापार समझौते पर बातचीत में कुछ मुद्दे हैं। भारत की कुछ रेड लाइन्स हैं। कुछ ऐसी शर्तें हैं जिनसे भारत समझौता नहीं कर सकता। जयशंकर ने भारत और यूएस के बीच ट्रेड डील पर अहम अपडेट दिया। उन्होंने कहा कि बातचीत अभी भी चल रही है क्योंकि किसी ने भी यह नहीं कहा कि बातचीत बंद है।

भारत का ऐक्शन, यूएस के लिए भारतीय डाक सेवाएं सस्पेंड

- अब सिर्फ 8700 रुपए तक के डॉक्यूमेंट-गिफ्ट भेज सकेंगे
- अमेरिकी टैरिफ की वजह से फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। ट्रम्प के टैरिफ के जवाब में भारतीय डाक विभाग 25 अगस्त से अमेरिका के लिए सभी तरह के डाक सामानों की बुकिंग सस्पेंड करने जा रही है। फिलहाल ये फैसला अस्थायी रूप से लागू होगा। 23 अगस्त को डाक विभाग ने एक प्रेस नोट जारी करके इसकी जानकारी दी। यह फैसला अमेरिकी सरकार के एक एग्जीक्यूटिव ऑर्डर के जवाब में लिया गया है, जिसमें अमेरिका ने 29 अगस्त से 800 डॉलर (करीब 70 हजार) तक के कीमत वाले सामानों पर कस्टम ड्यूटी छूट को खत्म करने का फैसला लिया है। यानी अमेरिका से भारत भेजने वाले सामानों पर अब ड्यूटी देनी होगी। पोस्टल

डिपार्टमेंट ने कहा, 29 अगस्त से अमेरिका जाने वाले सभी अंतरराष्ट्रीय डाक सामानों पर देश-विदेश इंटरनेशनल इमरजेंसी इकोनॉमिक पावर एक्ट टैरिफ स्ट्रक्चर के अनुसार कस्टम ड्यूटी देनी होगी। चाहे उनकी कीमत कितनी भी हो। हालांकि, 100 डॉलर (करीब 8,700 रुपए) तक की कीमत वाले गिफ्ट आइटम्स को ड्यूटी से छूट मिलती रहेगी। सरकार के अनुसार, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 30 जुलाई, 2025 को विशेष आदेश जारी किया था। इस आदेश के अनुसार 800 डॉलर तक के सामान पर लगने वाली ड्यूटी (सीमा शुल्क) की छूट खत्म कर दी गई है। पहले, कम कीमत वाले सामान बिना ड्यूटी के अमेरिका में आ जाते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। आदेश के मुताबिक 29 अगस्त, 2025 से अमेरिका जाने वाले सभी सामानों पर ड्यूटी लगेगी,चाहे कीमत कुछ भी हो।

डिफेंस और एयरोस्पेशन निर्माण का हब बन सकता है एमपी

रक्षा उत्पादन की जॉइंट सेक्रेट्री बोलीं- जबलपुर में 300 करोड़ की लागत से शुरू होगी एमआरओ सर्विस

भोपाल (नप्र)। रक्षा उत्पादन विभाग भारत सरकार की संयुक्त सचिव डॉ. गरिमा भगत ने कहा है कि मध्यप्रदेश में रक्षा और एयरोस्पेस निर्माण का हब बनने की अपार संभावनाएं हैं। हमारा प्रयास है कि एमएसएमई और स्टार्टअप को मजबूत सहयोग देकर उन्हें राष्ट्रीय रक्षा आपूर्ति श्रृंखला में महत्वपूर्ण भागीदार बनाया जाए।

उद्योग, अकादमिक संस्थानों और अनुसंधान संगठनों के बीच निरंतर सहयोग ही इस क्षेत्र में नवाचार को गति देगा और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को आगे बढ़ाएगा। जबलपुर में 300 करोड़ की लागत से एक मैन्युफैक्चरिंग, रिपेयर एंड ओवरहाल (एमआरओ) सुविधा शुरू की जाएगी जो रोजगार देगी। रक्षा उद्योग को बढ़ावा देने और नए अवसरों पर चर्चा के लिए रक्षा इंडस्ट्री इंटरेक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इसमें संयुक्त सचिव डॉ. भगत ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम एमएसएमई को रक्षा पीएसयू और बड़े प्राइवेट सेक्टर से सीधे जोड़ते हैं जिससे टेक्नोलॉजी ट्रांसफर, जॉइंट वेंचर और महत्वपूर्ण प्रणालियों के सह-विकास के अवसर बढ़ते हैं। उन्होंने बताया कि एसआरआईजन पोर्टल पर अब तक 39 हजार से अधिक प्रोडक्ट स्वदेशीकरण के लिए लिस्टेड हैं, जो निवेशकों और स्टार्टअप के लिए बड़े अवसर पैदा करते हैं।

कार्यक्रम के दौरान जबलपुर के रक्षा उद्योग के मजबूत ईकोसिस्टम और वेंडर बेस पर विशेष चर्चा हुई। डॉ. गरिमा भगत ने बताया कि जबलपुर में 300 करोड़ रु. की लागत से एक मैन्युफैक्चरिंग, रिपेयर एंड ओवरहाल (एमआरओ) सुविधा स्थापित की जा रही है जिससे स्थानीय उद्योगों के लिए बड़े अवसर तैयार होंगे। औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन प्रमुख सचिव राघवेंद्र सिंह ने कहा कि मध्यप्रदेश अपनी भौगोलिक स्थिति और अनुकूल औद्योगिक वातावरण के कारण रक्षा निर्माण में निवेश के लिए देश का सबसे स्वाभाविक और सर्वोत्तम स्थान है। राज्य में ऑटो क्लस्टर, ड्रोन टेक्नोलॉजी, तकनीकी वस्त्र और इलेक्ट्रॉनिक्स सैक्टर रक्षा क्षेत्र की जरूरतों को पूरा करने के लिए तेजी से विकसित हो रहे हैं। राज्य की एयरोस्पेस एंड डिफेंस पॉलिसी 2025 के अंतर्गत भूमि रियायती दरों पर उपलब्ध कराई जा रही है। साथ ही पूंजीगत निवेश पर 40 प्रतिशत तक की सब्सिडी और आरएंडडी, टेस्टिंग जैसी सुविधाओं पर आकर्षक प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं।

शनिचरी अमावस्या पर उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

उज्जैन में शिप्रा के त्रिवेणी घाट पर फव्वारों से स्नान, श्रद्धालुओं ने दान-पुण्य किया

उज्जैन (नप्र)। शनिवार को शनिचरी अमावस्या का पर्व मनाया गया। उज्जैन में शिप्रा नदी के त्रिवेणी घाट पर लोग रात 12 बजे के बाद से ही पहुंचने लगे थे। स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने शनि देव और नवग्रह का पूजन किया। शिप्रा नदी के त्रिवेणी घाट पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे थे। यहां दूर-दूर से आए श्रद्धालु शिप्रा में आस्था की डुबकी नहीं लगा पा रहे हैं। प्रशासन ने स्नान के लिए घाटों पर फव्वारों की व्यवस्था की थी।

शनिचरी अमावस्या पर नव ग्रह शनि मंदिर को फूलों से सजाया गया था। शनि महाराज को राजा के रूप में पगड़ी पहनाकर आकर्षक श्रृंगार किया गया था। शनि मंदिर में अमावस्या का

अपना महत्व है। यहां श्रद्धालु डुबकी लगाकर मंदिर के दर्शन करते हैं। इसके बाद पनौती के रूप में अपने कपड़े और जूते-चप्पल यहीं छोड़ जाते हैं।

जूते-चप्पल और कपड़ों की नीलामी- मान्यता है कि शनिचरी अमावस्या पर श्रद्धालु स्नान के बाद अपने जूते-चप्पल और कपड़े दान स्वरूप वहीं छोड़कर जाते हैं। अमावस्या पर देशभर से आए श्रद्धालुओं ने भी त्रिवेणी घाट पर पनौती समझे जाने वाले जूते-चप्पल और कपड़ों का ढेर लगा दिया है। हालांकि, दान स्वरूप छोड़े गए जूते-चप्पल और कपड़ों की प्रशासन द्वारा नीलामी की जाएगी।

शनि पूजन से होता है विशेष लाभ

शनि मंदिर के पंडित जितेंद्र बैरागी ने बताया कि देर रात 12 बजे से ही श्रद्धालुओं की भीड़ आना शुरू हो गई थी। अमावस्या पर पितरों की आत्मा की शांति के लिए तर्पण और श्राद्ध कर्म भी किया जाता है। इस दिन स्नान और दान का भी विशेष महत्व होता है।

शनिवार को अमावस्या तिथि पड़ने के कारण शनि देव की पूजा करने से विशेष शांति मिलती है। जिन लोगों पर शनि की साढ़े साती चल रही हो या पितृ दोष, कालसर्प योग, अशुभ ग्रह योग सहित अन्य कठिनाइयां हों, उन्हें इस दिन शनिदेव की पूजा से विशेष लाभ मिलता है।

मुख्यमंत्री ने फ्लाईओवर और सड़क परियोजनाओं के लिए महाकौशलवासियों को दी बधाई

कटनी माइनिंग कॉन्क्लेव से होगा खनिज संसाधनों का बेहतर उपयोग

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जबलपुर के फ्लाईओवर सहित दो सड़क चौड़ीकरण परियोजनाओं का हुआ लोकार्पण और सड़क निर्माण व चौड़ीकरण संबंधी 6 कार्यों के शिलान्यास के लिए महाकौशलवासियों को बधाई दी। उन्होंने कटनी में शनिवार को आयोजित मध्यप्रदेश माइनिंग कॉन्क्लेव 2.0 के लिए भी प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जबलपुर प्रवास से पहले जारी अपने संदेश में कहा कि जबलपुर का एलिवेटेड कॉरिडोर प्रदेश का सबसे बड़ा फ्लाईओवर होगा। हमारा सौभाग्य है कि लोकार्पण समारोह में केंद्रीय केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी पधारे थे । कार्यक्रम में प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि महाकौशल में कटनी और शहडोल खनन गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र है। कटनी में खनन आधारित उद्योगों में निवेश बढ़ाने के लिए माइनिंग इंडस्ट्री कॉन्क्लेव-2025 का आयोजन हो रहा है। इस आयोजन में देश के कई प्रतिष्ठित औद्योगिक घरानों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। प्रदेश में उपलब्ध संसाधनों का बेहतर से बेहतर दोहन करते हुए राज्य सरकार गरीब कल्याण, युवाओं के रोजगार और नारी सशक्तिकरण किसान कल्याण के लिए निरंतर प्रयास कर रही हैं। राज्य सरकार ने अलग-अलग सेक्टर्स में उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए अभियान चलाया हुआ है, जिससे प्रदेश के हर वर्ग के लोगों को लाभ मिल रहा है। अब प्रदेश के युवाओं को दूसरे राज्यों में काम करने के लिए नहीं जाना पड़ेगा। सरकार के इन प्रयासों से उन्हें अपनी क्षमता और योग्यता के बल पर प्रदेश में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। मध्यप्रदेश देश का नंबर-1 राज्य बनेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश सरकार पूरी क्षमता के साथ विकास कार्यों को आगे बढ़ा रही है।

देहदान का पुण्यकारी निर्णय परोपकार की अद्वितीय मिसाल : मुख्यमंत्री

देहदान करने वाली श्रीमती रमा का गार्ड ऑफ ऑनर के साथ हुआ अंतिम संस्कार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देहदान करने वाली भोपाल निवासी श्रीमती रमा चौदा जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने कहा कि देहदान का यह पुण्यकारी निर्णय समाज में करुणा, सहअस्तित्व की भावना और परोपकार की अद्वितीय मिसाल है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की मंशानुसार राज्य शासन द्वारा गांधी मेडिकल कॉलेज में देहदान के उपरांत श्रीमती रमा को गार्ड ऑफ ऑनर के साथ ससम्मान अंतिम विदाई दी गई। भोपाल में यह पहला अवसर है जब किसी का राजकीय सम्मान के साथ देहदान संपन्न हुआ।

14 हजार पात्र बंदियों को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर मिली सजा में छूट

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर जेल विभाग को प्रदेश की जेलों के पात्र दंडित बंदियों की सजा में लगभग 60 दिन की छूट देने के निर्देश दिए हैं। सजा में दी गई इस छूट से विभिन्न जेलों में बंद 21 हजार बंदियों में से लगभग 14 हजार बंदी लाभान्वित होंगे। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार की इस समय पूर्व रिहाई नीति में आतंकवादी गतिविधि, लैंगिक अपराध (पास्को, बलात्कार), मादक पदार्थ और दो से अधिक हत्या जैसे गंभीर अपराध के दोषी बंदी पात्र नहीं होते हैं, उनकी सजा यथावत रहेगी।

मुख्यमंत्री ने दी राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस की बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर देश-प्रदेशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चंद्रयान-3 मिशन के विक्रम लैंडर की सफल लैंडिंग के साथ हमारे देश को वर्ष 2023 में आज ही के दिन चंद्रमा पर प्रज्ञान रोवर की स्थापना की ऐतिहासिक सफलता प्राप्त हुई थी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में भारतीय अंतरिक्ष मिशन प्रतिदिन नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। प्रत्येक देशवासी को गर्व है कि हमारे वैज्ञानिकों के सतत् परिश्रम और समर्पण ने भारत को वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में स्थापित किया है।

गोटमार मेले में 792 लोग घायल

पांढुर्णा में पत्थरबाजी से किसी का सिर फूटा, किसी का पैर फैक्चर; भीड़ में फंसी रही एम्बुलेंस

पांढुर्णा (नप्र)। मध्यप्रदेश के पांढुर्णा में आयोजित मेले में आज गोटमार खेला जा रहा है। जाम नदी किनारे बसे पांढुर्णा और सावरगांव की ओर से परंपरा के अनुसार एक-दूसरी तरफ पत्थर मारे जा रहे थे। दोनों किनारों पर बड़ी संख्या में लोग जुटे थे। 792 लोग घायल हो चुके थे।

प्रशासन ने घायलों के इलाज के लिए 6 अस्थायी स्वास्थ्य केंद्र बनाए गए हैं, इनमें 58 डॉक्टर और 200 मेडिकल स्टाफ तैनात है। सुरक्षा के लिहाज से 600 पुलिस जवान तैनात हैं। कलेक्टर अजय देव शर्मा ने

धारा 144 भी लागू कर दी है।

ऐसे होती है गोटमार मेले की शुरुआत- जाम नदी में चंडी माता की पूजा की जाती है। सावरगांव के लोग पलाश का पेड़ काटकर लाते हैं और नदी के बीच में लगाते हैं। इस झंडे (पेड़) को जंगल से लाने की परंपरा पीढ़ियों से सावरगांव निवासी सुरेश कावले का परिवार निभाता आया है।

झंडा लगाने के बाद पांढुर्णा और सावरगांव के लोगों के बीच पत्थरबाजी होती है। सावरगांव के लोग पलाश का पेड़ और झंडा नहीं निकालने देते। वे इसे लड़की मानकर रक्षा करते हैं। पांढुर्णा के लोगों को लड़के वाला मानते हैं। पांढुर्णा के लोग पत्थरबाजी कर पलाश का पेड़ कब्जे में लेने का प्रयास करते हैं। अंत में झंडे को तोड़ लेने के बाद दोनों पक्ष मिलकर चंडी माता की पूजा कर गोटमार को खत्म करते हैं।

शत्रुघ्न सिन्हा के भाई केके सहाय ने सहगल व मुकेश को किया जीवंत

भोपाल। भोपाल में गत रात्रि एक अंतरंग संगीत समागम में छत्तीसगढ़ के सुगम संगीत के बादशाह और उद्योगपति तथा फ़िल्म स्टार शत्रुघ्न सिन्हा के भाई केके सहाय ने सुमधुर संगीत से वातावरण को सुगंधित कर दिया। केके सहाय ने केएल सहगल एवं मुकेश की यादें ताज़ा कर दीं । ख़ासकर- झूम झूम के नाचो आज, गाओ खुशी के गीत । भारतीय सुगम संगीत के फ़नकारों ने भी सभी नौ-रसों को बरसा कर महफिल के मेहमानों को विभोर कर दिया । इसका आयोजन राजधानी की गायिका नंदिनी सोमानी ने 'सुर मय स्वर' के बैनर तले किया । महफिल शाम 5 बजे से रात 11 बजे तक चली। क़रीब दो दर्जन गायक और गायिकाओं ने समाँ बाँध दिया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के संस्कृति सलाहकार श्रीराम तिवारी, जो विक्रमादित्य शोध पीठ के निदेशक और वीर भारत न्यास के सचिव भी हैं । कार्यक्रम की अध्यक्षता की विशेष अतिथि थे-प्रख्यात कवयित्री, कहानीकार और शिक्षाविद डॉ मंजु तिवारी एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित समाजसेवी तथा गायक प्रभाकर जुगादे ।

केके सहाय सहित सभी गायक-गायिकाओं ने एक-से-बढ़कर-एक प्रस्तुति दी । पंकज पाठक ने गाने के बजाय हरिवंशराय बच्चन की मधुर मधुशाला तरन्नुम में सुनाई। 14 वर्षीया ब्लेसी सोमानी ने-'ये मोह मोह के धागे'- गाकर राग यमन को जीवंत कर उसे राग पूरिया धनाश्री तक पहुँचा दिया । नंदिनी एवं नरेश मालवीय ने-प्यार में होता है क्या जादू, ऋषिकेश थालनेरकर एवं सुनैना तिवारी ने-गोरे रंग पे न इतना आदि गानों की शानदार प्रस्तुति दी । शिवांगी पवार, अजय खंगन, सजिश नायर, मधु सिंह, अतुल, नीरज पुरसवानी, योगेश मलानी, नेहा, मदन विश्वकर्मा, प्रदीप हरतालकर, सुरेश तनवानी, मुकेश पालीवाल, रुपबसंत, गरिमा भट्ट, प्रज्ञा चौबे, पीएन स्वर्णकार, हरीश जाँगड़, भूषण मधुकर शेंडये आदि ने भी अपनी बेहतरीन प्रस्तुति दी । अर्पिता सक्सेना ने सुंदर गाया और संचालन भी किया।

उज्जैन समेत 13 जिलों में तेज बारिश का अलर्ट

एमपी में इस सीजन 33.6 इंच बारिश, कोटे का 91प्रतिशत, गुना में सबसे ज्यादा

भोपाल (नप्र)। मानसून ट्रफ और साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम की वजह से मध्यप्रदेश में अगले 3 दिन तक तेज बारिश का दौर बना रहेगा। उज्जैन समेत 13 जिलों में अलर्ट है। शुक्रवार को भोपाल समेत 20 जिलों में बारिश हुई थी।

नर्मदापुरम में चार दिन से तवा डैम के गेट लगातार खुले हुए हैं। बुधवार को सीजन में दूसरी बार 13 में से 5 गेट खोले गए थे, जो अब तक खुले हुए हैं। (शनिवार) सुबह 8 बजे तीन गेट पांच फीट की ऊंचाई पर खोले गए थे। करीब 25,800 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा ता। वर्तमान में तवा डैम का जलस्तर 1163.70 फीट दर्ज किया गया था।

आज इन जिलों में होगी बारिश- मौसम विभाग के अनुसार, अगले 24 घंटे में नीमच और मंदसौर में अति भारी बारिश का अलर्ट है। वहीं, शिवपुरी, मुरैना, गुना, राजगढ़, शाजापुर, आगर-मालवा, उज्जैन, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ और अलीराजपुर में भारी बारिश हो सकती है।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि प्रदेश के ऊपर से एक मानसून ट्रफ गुजर रही है। वहीं, उत्तरी हिस्से में साइक्लोनिक सर्कुलेशन सक्रिय है। इस वजह से शुक्रवार को कई जिलों में बारिश हुई।

सर्जन ने ऑपरेशन थिएटर के बाहर से की सर्जरी

भोपाल पहुंची देश की पहली मोबाइल टेली-रोबोटिक यूनिट, यहां से इंदौर-जबलपुर पहुंचेगी

भोपाल (नप्र)। कल्पना कीजिए मरीज ऑपरेशन थिएटर में है, लेकिन सर्जन बस में बैठे कंसोल से रोबोटिक आर्म्स को नियंत्रित कर रहे हैं, और अंदर सटीक सर्जरी चल रही है। यही नजारा राजधानी भोपाल में दिखा, जब भारत में बनी पहली मोबाइल टेली रोबोटिक सर्जरी यूनिट एसएसआई मंत्रा नर्मदापुरम रोड स्थित एसईआर अस्पताल (निजी) पहुंची और इसका पहला केस एक महिला की बच्चेदानी निकालने की सर्जरी (हिस्ट्रैक्टोमी) का किया गया।

जिसमें मरीज ओटी में थी, जबकि ऑपरेटिंग सर्जन बस में लगे टेली-रोबोटिक कंसोल पर मौजूद थीं। शनिवार को इसी यूनिट से दो और सर्जरी निर्धारित हैं।

यह रोबोटिक सर्जिकल यात्रा 21 अगस्त को गुरुग्राम से शुरू हुई है। भोपाल के बाद यूनिट इंदौर और फिर जबलपुर जाएगी। कुल 9 दिनों में लगभग 700 किमी का सफर तय करते हुए यह बस कई शहरों में रुकेगी, जहां डॉक्टर्स, मेडिकल स्टूडेंट्स और हेल्थ-स्टाफ के लिए लाइव डेमो और

हैंड्स-ऑन ट्रेनिंग आयोजित की जा रही है।

कार्यक्रम के भोपाल चरण में सर्जरी डॉ. प्रिया भावे चित्तावर द्वारा की गईं। उनके अनुसार, यह मध्य भारत में महिलाओं पर की गई पहली टेली-रोबोटिक सर्जरी और भारत में दूसरी ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सर्जन दूरस्थ कंसोल से रोबोट को नियंत्रित करते हैं और ओटी में रोबोट वास्तविक सर्जरी करता है। नियंत्रण पूरी तरह सर्जन के हाथ में रहता है।

राजस्थान से हुई थी शुरुआत- देश में सबसे पहले बीते माह राजस्थान चरण में भी इस मोबाइल यूनिट ने जयपुर और जोधपुर में डेमो-आधारित सर्जरी की थीं। मध्यप्रदेश में यह अभियान चिकित्सकों को रियल टाइम ट्रेनिंग देता है। यानी, डॉक्टर रोबोटिक सिस्टम के कंसोल, आर्म्स की मूवमेंट, 3डी विजन, टिश्यू हैंडलिंग और एर्गोनॉमिक करीब से समझते हैं। इससे रोबोटिक प्लेटफॉर्म का अपनाव तेज़ होता है।

टेली-रोबोटिक सर्जरी क्या है

- सर्जन ओटीमें मौजूद न हो तो भी लो-लेटेंसी कनेक्टिविटी (फाइबर,5 प्रतिशत या समर्पित नेटवर्क) के माध्यम से कंसोल से रोबोटिक आर्म्स को चलाते हैं।
- 3डी हाई-डेफिनिशन विजन और फाइन मूवमेंट से सूक्ष्म कट, कम खून बहाव और बेहतर टिश्यू प्रिजर्वेशन संभव होता है।
- छोटे चीरे और कम ट्रॉमा से कम दर्द, कम अस्पताल में रहने की अवधि, और रोगी की जल्दी वापसी संभव।
- छोटे शहरों/जिलों में बैठे मरीज को मेट्रो-लेवल विशेषज्ञता मिल सकती है। यात्रा, खर्च और देरी, तीनों घटते हैं।
- मोबाइल यूनिट स्वयं ट्रेनिंग प्लेटफॉर्म भी है। डॉक्टर को सिस्टम अपनाने में लर्निंग कर्व छोटा होता है।

सुरक्षा, कनेक्टिविटी और प्रोटोकॉल

टेली-रोबोटिक सर्जरी के लिए अस्पतालों को स्थिर और सुरक्षित नेटवर्क, पावर बैकअप और क्लिनिकल प्रोटोकॉल की जरूरत होती है। मरीज चयन , एनेस्थीसिया रेडीनेस, रोबोटिक सिस्टम की प्री चेकलिस्ट और जटिल मामलों में हाइब्रिड व कन्वर्जन बैकअप जैसे कदम अनिवार्य हैं। टीम के अनुसार, इन मानकों का पालन कर मरीज सुरक्षा सर्वोपरि रखी जाती है।

टेक्नोलॉजी की पहुंच बढ़ाने की पहल

मोबाइल टेली-रोबोटिक यूनिट एसएस इनोवेशन ने विकसित की है। इसका उद्देश्य यह है कि जहां रोबोटिक सर्जरी की पहुंच कम है, वहां टेक्नोलॉजी को मरीज तक ले जाना। टीम का विजन ऐसा नेटवर्क बनाना है कि भोपाल के विशेषज्ञ जरूरत पड़ने पर रीवा या किसी दूरस्थ जिले के ओटी में रोबोट के जरिए सर्जरी कर सकें। इससे विशेषज्ञों की कमी वाले क्षेत्रों में भी क्वालिटी सर्जरी, समय पर उपलब्ध हो सकेगी। एसईआर अस्पताल में शुक्रवार को हिस्ट्रैक्टोमी का केस किया गया, शनिवार को दो और प्रक्रियाएं तय हैं। बस के भीतर लगे कंसोल से सर्जन ने इंस्ट्रूमेंट आर्म्स को कंट्रोल किया, जबकि ओटी के भीतर रोबोट ने सटीक मूवमेंट्स से टिश्यू डिसेक्शन और हेमोस्टेसिस को अंजाम दिया। कैंपस में आए डॉक्टरों और पीजी स्टूडेंट्स ने लाइव-फीड पर प्रक्रिया देखी। सवाल-जवाब सत्र में शामिल हुए और सिस्टम की बारीकियों को समझा।

'मछली' फैमिली का कृषि भूमि पर कब्जे का अंदेशा, जांच

सवा सौ करोड़ की 7 प्रॉपर्टी हो चुकी हैं जमींदोज, इसके उपयोग का भी बन रहा प्लान

भोपाल (नप्र)। भोपाल के 'मछली' परिवार के कब्जे से छुड़ाई गई करीब 65 एकड़ जमीन का अब क्या उपयोग होगा? इसे लेकर जिला प्रशासन प्लान बना रहा है। वहीं, कृषि भूमि पर भी कब्जे की आशंका है। राजस्व निरीक्षक और पटवारियों से इसकी जांच करवाई जा रही है।

जिला प्रशासन ने 23 दिन के अंदर करीब सवा सौ करोड़ रुपए की कुल 7 प्रॉपर्टी को 23 दिन के अंदर जमींदोज किया था। पहली कार्रवाई 30 जुलाई और दूसरी कार्रवाई 21 अगस्त को की गई थी। सभी प्रॉपर्टी और कब्जे हथाईखेड़ा डैम के पास ही थे। इनमें करीब 35 साल पुरानी तीन मंजिला आलीशान कोठी भी शामिल हैं, जो 15 हजार स्क्वायर फीट में बनी थी। यही पर गैराज, पार्क, पोर्च भी बना रखे थे।

कुछ जमीन पर कब्जे की जानकारी सामने आई- अफसरों की माने तो कुछ और जमीन पर कब्जे की जानकारी सामने आई है, लेकिन कब्जा मछली परिवार का ही है, ये अभी साफ नहीं हुआ है। इनमें कृषि भूमि भी शामिल हैं। ऐसे में पूरी पड़ताल के बाद प्रशासन आगे की कार्रवाई करेगा। तहसीलदार अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि दो बड़ी कार्रवाई में अधिकांश कब्जा हटा चुके हैं। आगे भी जांच जारी है। इसमें कब्जा सामने आया तो कार्रवाई की जाएगी।

यह दो बड़ी कार्रवाई हुई- 30 जुलाई को पहली कार्रवाई की गई थी। इस दौरान 6 अवैध निर्माण तोड़े गए थे, जो डैम किनारे पर ही बने थे। इनकी और सरकारी जमीन की कीमत करीब 100 करोड़ रुपए आंकी गई थी।

बीजेपी महिला मोर्चा का पीसीसी के सामने प्रदर्शन

भोपाल में बोरे उठाकर कांग्रेस नेता के बयान का विरोध, पुलिस ने बैरिकेड लगाकर रोका

भोपाल (नप्र)। राजगढ़ में कांग्रेस नेता द्वारा लाड़ली बहनों को लेकर दिए गए बयान के विरोध में बीजेपी महिला मोर्चा ने आज पीसीसी के सामने प्रदर्शन किया। भाजपा महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं और लाड़ली बहनों ने हाथ में बोरे लेकर रेड क्रॉस अस्पताल से पीसीसी कार्यालय की ओर जाने वाले मार्ग पर विरोध कर मार्च निकाला।

प्रदर्शन कर रही महिलाएं जैसे ही पीसीसी कार्यालय की ओर बढ़ीं, पुलिस ने बीच सड़क पर बेरिकेड्स लगाकर उन्हें रोक दिया। इस दौरान महिलाओं ने कांग्रेस पार्टी मुर्दाबाद के नारे भी लगाए।

कांग्रेस नेता यशवंत गुर्जर के लाड़ली बहना वाले बयान पर भाजपा महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं ने

शनिवार को कांग्रेस कार्यालय पर हाथ में बोरे और तख्ती लेकर धरना प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं को पुलिस ने रास्ते में ही बैरिकेडिंग कर रोक दिया। इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष महिला मोर्चा सुषमा चौहान ने आरोप लगाया कि कांग्रेस के नेताओं ने अभद्र टिप्पणी महिलाओं पर की है।

कांग्रेस हमेशा से गंदी राजनीति करती आई है। हम देखेंगे कि कैसे कांग्रेस के नेता लाड़ली बहनों को बोरे में भरेंगे। बता दें कि राजगढ़ जिले के कांग्रेस नेता यशवंत गुर्जर ने पिछले दिनों लाडली बहनों को लेकर विवादित बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि अबकी बार एक साथ जीतेंगे। लाड़ली बहनों को बोरियों में भर देंगे।

बोरियों में भरने वाला बयान मेरा नहीं

यशवंत गुर्जर ने कहा कि लाड़ली बहन हमारी है। मैं उनके विरोध में बोल ही नहीं सकता। लाड़ली बहनों को बोरियों में भरने वाला बयान मेरा नहीं था। मुझे एक बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा था कि लाड़ली बहनों को बोरियों में भर दूंगा। तब मैंने उनसे कहा था बा साहब आप तो पानी पियो। ये मेरे शब्द नहीं थे, बल्कि वहां मौजूद एक बुजुर्ग के शब्द थे, जिन्हें मैंने मंच से दोहराया था। वह बुजुर्ग वर्मा समाज के थे, लेकिन किस गांव से थे यह मुझे नहीं पता।

लाड़ली बहनों की ही देन है कि आज मैं जिला पंचायत सदस्य हूं। मैंने भाजपा जिला अध्यक्ष को हराया है। मैं लाड़ली बहनों का विरोध क्यों करूंगा? बल्कि मैं तो उनके पक्ष में बोल रहा हूं कि उन्हें 3000 महीना मिलना चाहिए और जिनका नाम योजना से कट गया है, उनके नाम जोड़े जाने चाहिए।

व्यंग्य

मोहन वर्मा
लेखक पत्रकार हैं।

अच्छी नींद सोने के लिए घोड़े कहां से लाऊं

न जाने वो कैसे लोग होते होंगे जो घोड़े बेचकर सोते है। ये सवाल भी बार बार मन में आता है कि लोग घोड़े लाते कहां से हैं? और फिर उनको बेचने का नींद से क्या ताल्लुक? जो इन्हें खरीदते है क्या वे भी अच्छी नींद आने के लिए इन्हें खरीदते हैं? घोड़ों की ये खरीदी बिक्री कहां और किस कीमत पर होती है? ये सब सोचकर ओर भी नींद नहीं आती । अब अच्छी नींद सोने के लिए घोड़े कहां से लाऊं ?

इस बाबद जब आसपास नजरें दौड़ाता हूं तो सब तरफ घोड़े कम गधे ज्यादा नजर आते है।सिर झुकाए, अपनी क्षमता से ज्यादा बोझ उठाए। निरीह,चुपचाप। अब तो किसी गधे को बहुत दिनों से न तो गुस्से में दुलत्ती झाड़ते देखा और न ही मुंह से आवाज निकाल कर ढेंचू ढेंचू करते सुना। हर तरफ गधे ही गधे,घोड़े ढूंढने कहां जाऊं? दिनभर गधे की तरह खटते रहने के बाद भी नींद नहीं आती और लोग हैं कि घोड़े बेचकर सोते हैं । कोई बताए क्या करूं?

लोग कहते हैं घोड़े या तो इन दिनों रेस में दौड़ रहे है या गधों को(माफ कीजिए,दूल्हों को) पीठ पर लादे शादी शादी खेलने में व्यस्त हैं । बाजार

में नजर ही नहीं आते। जो बचे भी होंगे उन्हें बेचकर बाकी लोग सो रहे है। खुद की,अपने आसपास की,समाज की,देश की चिंता किए बगैर। हर किसी की किस्मत में कहां होता है घोड़े बेचकर सोना।

आभासी दुनिया की तरह कुछ लोग नींद में ऐसे खर्राटे भरते हैं जैसे उनके बेचे हुए घोड़ों की टॉप सुनाई दे रही हों। उनके खर्राटों को सुनकर लगता है उनके घोड़े उनके साथ ही हैं अब भी। सपनों में टप टप करते उनके साथ साथ दौड़ रहे है। दूसरों को ललचाते कि देखो कैसे खुशकिस्मत हैं कि बेच दिए फिर भी वफादार अब तक साथ निभा रहे हैं ।

किसी फिल्म में एक दृश्य था कि नायक की नींद में घोड़ों की टप टप उसे बैचेन किए रहती थी और वो सो नहीं पाता था। शायद जीवन में किन्ही दबंगों के आतंक से आक्रोशित, बदला लेने की इच्छा उन घोड़ों की टप टप से उसे सोने नहीं देती थी। वास्तविक जीवन में तो अब चैन से जीने से लिए लोग दबंगों के आतंक से बचने के लिए रजाई में मुंह घुसाए सोने का अभिनय करते दिखाई देते हैं। और उधर दबंग इनके अभिनय से खुश निश्चिंत होकर घोड़े बेचकर सोते हैं।

जीवन में मुहावरे कैसे और क्यों जुड़े पता नहीं मगर ऐसे कई मुहावरे है जो जीवन की सच्चाई और हकीकत बयां करते नजर आते है। खुशकिस्मत हैं वो लोग जो हर पल बैचेन करते हालातों, जादूभरी दुनिया के जादूगरों, दूसरों की नींद हराम करते दबंगों, टूटते बिखरते और फिर फिर सुहावने कल के सपने देखते हुए बिना घोड़ों की खरीद बेच के सो पा रहे है।

सोचता हूं बिना ज्यादा सोच विचार किए एकबार फिर कोशिश करूं कि शायद बगैर घोड़े बेचे नींद आ जाए।

लघु कथा

आखिरी चीख़

डॉ. प्रियंका सौरभ

गाँव की पगडंडी पर शाम का अँधेरा उतर रहा था। खेतों से लौटते लोग अपनी-अपनी झोपड़ियों में जा चुके थे। लेकिन मनीषा अब तक नहीं लौटी थी। माँ की आँखें बार-बार दरवाज़े की चौखट पर टिक जातीं। पिता थककर पंचायत के चौपाल तक गए, मगर जवाब मिला–

लड़की भाग गई होगीज्कल लौट आएगी।

सुबह हुई तो खेतों की मेड़ पर गाँव हिल गया। हँसती-खिलखिलाती उन्नीस बरस की कली अब निर्जीव पड़ी थी। कपड़ों के साथ उसकी इज़्ज़त भी तार-तार की जा चुकी थी।

पुलिस आई, कागज़ी खानापूर्ति हुई। रिपोर्ट लिखने से पहले ही कहा गया–

ये तो खुद की गलती से हुआ होगा।

पिता ने चीखकर कहा– क्या इंसाफ़ सिर्फ अमीरों के लिए है?

गाँव खामोश रहा। दरिंदों की हँसी कानों में गूँजती रही।

माँ की सूखी आँखें और पिता का टूटा हुआ मन सारा सच बयाँ कर रहे थे।

रात को वही खेत हवाओं से कराह रहा था।

मनीषा की चीखें अब भी वहाँ गूंज रही थीं–

मैं भागी नहीं थीज्मुझे बचा लो

सच और झूठ

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

अफ़सानानिगार के मुताबिक़ देश के ज़्यादातर शिक्षित-अशिक्षित, युवा, बड़े और बूढ़ों ने 'अली बाबा और चालीस चोर' की कहानी जरूर पढ़ी, सुनी या दूरदर्शन पर देखी होगी। चूँकि दरअसल यह कहानी किसी विशेष कालखंड की नहीं है, बल्कि निरंतर चलने वाली किस्सागोई है।

मैत्री की बैशाखियों के बल पर खड़ी लूली-लंगड़ी सरकार होने के बावजूद प्रधान ने 'चोर पकड़ो कारिंदों' के दस्तों को चोर जमात को पकड़ने की खुली छूट प्रदान कर दी। देश की धन-संपदा की जो कोई चोरी करता हुआ पाया जाए उसकी जमकर खबर ली जाए और पकड़े जाने पर अदालत में न्यायमूर्ति समक्ष पेश किया जाए।

राजाज्ञा पर चोरों की धड़पकड़ पर देश भर में हड़कंप मच गया। नतीजा यह हुआ कि कोई चारे की चोरी में, तो कोई अख़बारी जमीन-जायदाद अपने नाम करने पर, तो किसी पर रुपयों को दाएँ-बाएँ करने के आरोप पर कार्रवाई होने लगी।

दिन-रात की धड़पकड़ से तंग आकर छुटकारा पाने लिए देश के नामचीन चोरों द्वारा देश की राजधानी में एक महासम्मेलन आयोजन किया गया। जिसमें देश भर के छोटे-बड़े सभी प्रकार के चोरों ने शिरकत की। पकड़े जाने और सजा से बचने के लिए नाना प्रकार के उपायों पर विचार-विमर्श हुआ और अंत में चोरों ने मिलकर एक नायाब कारगर तरीक़ा खोज निकाला।

सबसे बड़ा चोर जो झूठ बोलने के लिए देश और दुनिया भर में मशहूर था। उसने अपने चेले-चपाटों को सरकार के खिलाफ झूठे आरोप लगाने के मिशन पर लगा दिया और खुद आम जनता के बीच हवा में काठ की तलवार भाँजने लगा। देश के अंत्री, मंत्री, संत्रियों से लेकर

बड़े और धनी-मानी कारोबारियों के नाम पर झूठ-मूठ के आरोप चस्पाने लगा। साथ ही सरकार की निष्पक्ष मानी जाने वाली संस्थाओं के बारे में सड़क और संसद में अनर्गल प्रलाप करने लगा। झूठों के सरदार ने हवा में इस कदर धूल और धुँआ उड़ाया, आसमान में ऐसा तेज़ाबी गुब्बारा फोड़ा कि जंगल जलने लगे, आसमान से आग बरसने लगी।

सरकार और चोरों के बीच का मामला इस कदर बढ़ गया कि अदालत तक पहुँच गया। अदालत ने दोनों पक्षों में सुलह कराने की पुरज़ोर कोशिश की, पर चोरों के पैरोकारों ने लोकतंत्र की सबसे बड़ी अदालत में सरकार को ही चोर ठहराकर कटघरे में खड़ा कर दिया।

दरअसल चोरों की मंडली का एकमात्र मक़सद 'संविधान और लोकतंत्र बचाओ' के नाम पर मतदाताओं को बरगलाना और देश में अराजकता का पैदाकर माहौल को बिगाड़ना है। प्रधान और संवैधानिक संस्थाओं पर मनगढ़ंत आरोप लगाकर देश और प्रदेश में अपनी खोई हुई साख और जमीन को एक बार फिर से हासिल करना है। अफ़सानानिगार के मुताबिक़ देखते हैं सच और झूठ की इस जंग में कौन विजयी होता है।

हे! गणेश, मोदक लड्डुओं की खूब बरसात करो

वक्रोक्ति

लाल बहादुर श्रीवास्तव
लेखक व्यंग्यकार हैं।

हे! गणपति हे!श्रीगणेश तुम गणेशोत्सव पर्व के साथ ग़ाबिरंगे पांडालों में देश के कोने कोने में जब चतुर्थी से पधार ही गये हो तो इस दस दिवसीय उत्सवी पर्व पर इस बात का जरूर ध्यान रखना,गणेशोत्सव समिति के आयोजकों के कानों में इस बात का शंखनाद जरूर कर देना-पांडालों? में आरती उपरांत मोदक लड्डुओं की खूब बरसात होने देना साथ ही यह भी ख्याल रखना मोदक लड्डुओं को लेकर कहीं भी सूखा न पड़े।इनके अभाव में कोई भी भक्त देश का नाराज न रहे ,न शिकायत दर्ज करा सके, बस समानता के अधिकार से लड्डुओं का वितरण सुचारू रूप से होता रहे।

हे! श्री गणेश आपके दरबार में कुछ घटनाओं का सुमिरन कराना चाह रहा हूं आप तो सर्व व्यापी है फिर भी पुनः स्मरण करा रहा हूं।ये आपके एक सच्चे भक्त का दायित्व है और कर्तव्य भी।मैं भी अपनी गली मोहल्ले का एक छोटा सा मूषक जैसा ही सेवक हूं।

हे! प्रभु गजानन अभी अभी समाचारों में पढ़ने को मिला कि एम .पी.के भिंड जिले की गांव की पंचायत में आपके एक जागरुक भक्त ने शासन के हेल्प लाईन पोर्टल पर शिकायत दर्ज करायी थी कि स्वतंत्रता दिवस पंचायत

के झंडावंदन कार्यक्रम उपरांत वहां के चपरासी से उसने दो लड्डुओं की डिमांड की थी।चपरासी ने अनदेखा कर एक ही लड्डू उसके हाथ में थमा कर इतिश्री कर ली जिससे भक्त नाराज हो उठा ।क्रोधित हो उसने सी एम हेल्पलाईन तत्परता से लगा दी ।जब जबाब मांगा गया तो पंचायत ने उत्तर दिया चूंकि चपरासी को वितरण में आपूर्ति बनाएं रखनी थी इसलिए एक ही लडडू शिकायतकरता को प्रदाय किया गया।

हे !प्रभु लम्बोदर महाराज गत वर्ष भी बिहार के बक्सर के एक स्कूल की घटना के बारे में आपको ज्ञात होगा ।आपको पुनः स्मरण कराता हूं-स्कूल में 15अगस्त स्वतंत्रता दिवस पर सभी को मोदक लडडू बांटे जा रहे थे,इसी दौरान लड्डू से वंचित एक उज्जवल छात्र आया और शिक्षकों से लडने लगा उसका आरोप था कि उसे एक भी लड्डू नसीब नहीं हुआ ।हे! प्रभु तुम्हारे इस आज्ञाकारी छात्र भक्त ने शिक्षक की क्लास ले ली।स्कूल की छुट्टी होते ही शिक्षक पर हल्ला ही नहीं हमला भी बोल दिया।भगवन लड्डू के लिए इतनी मारामारी ठीक नहीं,शिक्षा के पावन मंदिर में जहां गुरू बच्चों को संस्कारित करते हैं गुरू को पूजते हैं वहां गुरू को ही .....

हे! एकदंत एक और मामला यूं पी के सहारनपुर के एक गांव की पाठशाला का है जहां स्कूल प्राचार्य ने दो स्कूली छात्रा बहनों को स्कूल से इसलिए निष्कासित कर दिया कि उन पर लड्डू चोरी का आरोप लगा था।परिवार भी कहा पीछे रहता इस मुद्दे को लेकर प्राचार्य के खिलाफ दण्डात्मक कार्यवाही कर डाली थी।

हे !गजानन एक और वाक्या रह-रहकर पढ़ा हुआ स्मरण हो रहा है स्वतंत्रता दिवस पर एक संस्था द्वारा आर्डर दिए लड्डू जब शहर से बनकर आए लडडू मोदक के न होकर अन्य साम्रगी से बने थे।उपस्थित आमंत्रित अतिथियों ,गणमान्य नागरिकों में से आधो को बंटे ,आधे मुंह लटकाएं रह गये।इतना हंगामा हुआ वंदे मातरम के बाद लड्डू लड्डू के नारे लगाने लगे।

हे !विनायक? तुम तो सृष्टि के विध्नहरता हो जो भी घटता है तुम्हारे संज्ञान में है।

ये तो एक दो ही उदाहरण तुम्हारे दरबार में पेश किये है न जाने ऐसे कितने किस्से इन पर्वों पर कहीं न कहीं स्कूलों संस्थाओं कार्यालयों में घटित होते रहते होगे जहां प्रिय मोदक लड्डुओं कै लिए संघर्ष रहता होगा।ये भी भगवन तुम्हें ज्ञात है।

कृपा करो प्रथम पूज्यते हे !गणेश महाराज।

गणेशोत्सव पर्व के पावन दस दिनों में गांव शहर के बच्चे बूढ़े जवानों को लड्डुओं से इतना तृप्त कर दो कि कोई रूठा रूठा न रह जाए,कोई हेल्प लाईन न लगा पाये ।सबके मुंह बस स्वादिष्ट लड्डू ही लडडू हो।भक्त लड्डू खाकर सुखमयी लम्बी लम्बी डकार मार सके।बारिश में लड्डुओं की इतनी बारिश बरसा दो।आने वाले गणतंत्र? पर्व पर कोई भक्त बंदा यह न कह सके मुझे लड्डू नहीं मिला।लडडूओं की भीनी -भीनी महक में बस तुम्हारे ही प्रभु 'गणपति बप्पा मोरिया 'के जय -जय जयकारें हो !

लघुकथा

निरीक्षण

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

मुख्यालय मंत्रालय और फिर सर्वोच्च समिति के निरीक्षण का आदेश पत्र कार्यालय पहुंचा तो प्रबंधक महाप्रबंधक और विभाग प्रभारी अखिल की चिंता बढ़ना स्वाभाविक था। एक माह के भीतर कार्यान्वयन के कागजात तैयार करना था सब पिछली तारीखों में। दो बाबू और एक चपरासी अखिल के सुपुर्द कर दिए गए। सुबह से शाम तक दस्तावेज बढ़ाने करने का काम शुरू हो गया। कार्यालय को सजाया संवारा गया। निरीक्षकों के समक्ष कुछ विशेष प्रश्नों के जवाब तैयार कर रखतने थे। बैक डेट में ही कुछ पुस्तकों की खरीद दिखानी थी। पुराने सक्षम प्राधिकारी का तबादला हो चुका था। समस्या विकट। नोटिंग सीट पर उनके हस्ताक्षर कैसे हों! खोज खबर हुई और किसी को बहला-फुसलाकर, डरा धमका कर फर्जी हस्ताक्षर लेकर रास्ता निकाला गया। विगत वर्ष पुस्तकों की खरीद में निविदाएं कितने लोगों ने दी थी उनका विवरण भरना था। फिर जो निविदायें अस्वीकृत हुईं उनके कारण और जो स्वीकृत हुई उसका पूर्ण विवरण भरा जाना था।

प्रबंधक महोदय हर हाल में निरीक्षण में खरे उतरना चाहते थे। विभाग प्रभारी अखिल की इमानदारी से उनका साबिका न था। उसूलों और ईमानदारी की बहुत बड़ी कीमत अखिल ने चुकाई थी।

इतना फर्जी! मेरे वश का नहीं है।

लाल फीता शाही को ना सुनना नहीं आता। हाकिम हुक्काम के नजदीक रहते-रहते इनमें भी वही राजसी ठाठ बाठ। अधीनस्थ को व्यवस्था सेवी नहीं अपना सेवी मानने की मानसिकता।

सिली मैटर यू कान्ट सॉल्व इट? एनीवे वे विल मैनेज द थिंग्स।

अब झेलो। कहते-कहते थक गई थोड़ा प्रैक्टिकल बनो मगर ना। हमारे मामा पूरी जिंदगी उसूलों से नहीं हटे। हमारे भैया ईमानदारी से ही नौकरी किये। अब कोई रुकवाएगा ट्रांसफर?

मुझे मालूम था। मेरा ट्रांसफर किया गया है, मैं ट्रांसफर नहीं हुआ हूँ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विट्ठलभाई पटेल शताब्दी वर्ष पर विशेष

प्रमोद दीक्षित मलय
लेखक शैक्षिक संवाद मंच उ.प्र. के संस्थापक हैं।

केन्द्रीय विधानसभा के प्रथम निर्वाचित भारतीय अध्यक्ष

आज देश किसी भारतीय के रूप में विट्ठल भाई पटेल के केंद्रीय विधानसभा के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने का शताब्दी वर्ष गर्व, गरिमा और गम्भीर उत्साह-उल्लास से मना रहा। स्मरणीय है कि 22 अगस्त, 1925 को हुए चुनाव में स्वराज्य पार्टी के प्रत्याशी विट्ठल भाई पटेल ने अंग्रेज समर्थित दीवान बहादुर टी. रंगाचारी को 54 के मुकाबले 56 मत प्राप्त कर पराजित किया था और 1902 में निर्मित वाइसरीगल लॉज (वायसराय का आवास सह कार्यालय) में आयोजित असेम्बली में 24 अगस्त, 1925 को अध्यक्ष पद की शपथ ली थी। वह अध्यक्ष पद पर अप्रैल 1930 तक रहे। तब अध्यक्ष का कार्यकाल एक वर्ष का होता था और आम चुनाव तीन वर्ष में होते थे।

24 अगस्त, भारतीय राजनीतिक इतिहास की गौरवशाली गरिमामय परम्परा का स्मरणीय दिवस, जब कोई भारतीय निर्वाचित होकर अंग्रेजी सत्ता की नीति निर्धारक संस्था सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली की अध्यक्षीय पीठ पर विराजमान हुआ था। मैं स्मरण कर रहा हूं, 24 अगस्त 1925 की उस महत्वपूर्ण घटना को जब बैरिस्टर, प्रखर वक्ता, विचारक और स्वराज्य पार्टी के सह-संस्थापक तथा वल्लभभाई पटेल के अग्रज विट्ठल भाई पटेल सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली (केंद्रीय विधानसभा, जिसे अब लोकसभा कहा जाता है) के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हो शपथ ग्रहण की थी। यह असेम्बली के गठन हेतु द्वितीय आम चुनाव था। यह उल्लेख करना भी समीचीन होगा कि तब केंद्रीय विधानसभा के अध्यक्ष को प्रेसीडेंट और उपाध्यक्ष को वाइस प्रेसिडेंट कहा जाता था। प्रथम वाइस प्रेसिडेंट सच्चिदानन्द सिन्हा थे। आज देश किसी भारतीय के रूप में विट्ठल भाई पटेल के केंद्रीय विधानसभा के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने का शताब्दी वर्ष गर्व, गरिमा और गम्भीर उत्साह-उल्लास से मना रहा। स्मरणीय है कि 22 अगस्त, 1925 को हुए चुनाव में स्वराज्य पार्टी के प्रत्याशी विट्ठल भाई पटेल ने अंग्रेज समर्थित दीवान बहादुर टी. रंगाचारी को 54 के मुकाबले 56 मत प्राप्त कर पराजित किया था और 1902 में निर्मित वाइसरीगल लॉज (वायसराय का आवास सह कार्यालय) में आयोजित असेम्बली में 24 अगस्त, 1925 को अध्यक्ष पद की शपथ ली थी। वह अध्यक्ष पद पर अप्रैल 1930 तक रहे। तब अध्यक्ष का कार्यकाल एक वर्ष का होता था और आम चुनाव तीन वर्ष में होते थे। वाइसरीगल लॉज सन् 1933 में दिल्ली विश्वविद्यालय को दे दिया गया। विट्ठल भाई पटेल का सबसे महत्वपूर्ण कार्य असेम्बली की बैठक के लिए अलग सचिवालय बनवाने का था। अध्यक्ष पीठ पर आसीन होने के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर दिल्ली विधानसभा में 24 अगस्त, 2025 को आयोजित भारत के राज्यों की विधान सभाओं के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष एवं विधान परिषदों के सभापति और उप सभापतियों के सम्मेलन में गृहमंत्री अमित शाह विट्ठल भाई पटेल पर एक स्मारक डाक टिकट का अनावरण करेंगे।

राजनीति और इतिहास में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के राबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के विरुद्ध 23 जून, 1757 को प्लासी युद्ध लड़ा गया और कंपनी ने नवाब को हराकर उसके सेनापति मीर जाफर को नवाब बनाया, जो कठपुतली नवाब सिद्ध हुआ, भारत में कम्पनी का शासन स्थापित हुआ। समय का पहिया अपनी गति से बढ़ता रहा और कंपनी का आधिपत्य क्षेत्र का विस्तार भी। वर्ष 1857, लाल किले तक सिमट कर रह गई मुगल सत्ता के सम्राट बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया और मंगल पांडे फांसी पर चढ़ने वाले पहले क्रांतिकारी बन इतिहास के पृष्ठों में अमर हो गये। ईस्ट इंडिया कंपनी से शासन-प्रशासन की बागडोर खींच कर ब्रिटेन के सम्राट ने अपने हाथों ले ली। वर्ष 1885 में अंग्रेज अधिकारी ए.ओ. ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना की और कांग्रेस के माध्यम से राजनीतिक गतिविधियां आरम्भ हुईं। वर्ष 1905 में बंगाल का विभाजन हुआ किंतु 12 दिसम्बर, 1911 को आयोजित दिल्ली दरबार में जार्ज पंचम के आदेश से रद्द होकर पूर्ववत् स्थिति बहाल हुई। कांग्रेस में लाल, बाल, पाल की राष्ट्रवादी विचारधारा का उदय, 1915 में महात्मा गांधी का स्वदेश आगमन हुआ और देश भर में भ्रमण कर जनता से संवाद प्रारंभ किया। सन् 1917 में चंपारन सत्याग्रह से उपजा अंग्रेजों के विरुद्ध देशव्यापी आक्रोश। भारत में स्व शासन की मांग बढ़ने लगी।

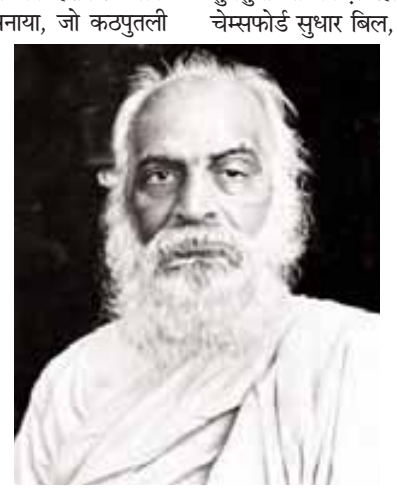

अंग्रेज सरकार यह सब देख-समझ रही थी और आमजन और विद्रोहियों में अंग्रेजी सत्ता का भय और हनक बनाये रखने के लिए कड़े कदम उठा अत्याचार कर रही थी तो राजनीति में रुचि रखने वाले समूहों को सुधार का झुनझुना भी पकड़ा रही थी। वर्ष 1919 में मॉन्टग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार बिल, जिसे भारत सरकार अधिनियम भी कहा गया और जिससे भारत सरकार में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाने, इम्पीरियल लेजिस्लेटिव असेम्बली में द्विसदनीय व्यवस्था करने तथा प्रांतों में द्वैध शासन स्थापित करने सम्बंधी अधिनियम ब्रिटिश संसद में पारित हुआ और सम्राट जार्ज पंचम द्वारा 23 दिसम्बर, 1919 के आदेश से असेम्बली के गठन की प्रक्रिया गतिमान हुई। तब नवम्बर 1920 में पहली बार सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली की 145 सीटों (104 सीट सामान्य निर्वाचन, 41 सीट मनोनीत) आम चुनाव हुए और वायसराय द्वारा सर फ्रेडरिक ह्वाइट असेम्बली के प्रथम अध्यक्ष नामित हुए, तत्पश्चात वर्ष 1923, 1926, 1930, 1935 और 1945 में आम चुनाव हुए। विधान सभा में रियासतों का कोई सदस्य नहीं था क्योंकि रियासतें ब्रिटिश भारत का हिस्सा नहीं थीं। वर्ष 1935 में निर्वाचन सम्बंधी एक व्यापक सुधार बिल पेश कर निर्वाचित सदस्यों की संख्या 250 और रियासतों, व्यापारियों, जमींदारों एवं अधिकारियों के लिए 125 मनोनीत सीटों की व्यवस्था किया किंतु इस व्यवस्था योजना पर कभी चुनाव नहीं हो सका। पहले आम चुनाव 1920 से ही कांग्रेस ने चुनावों का बहिष्कार किया था, किंतु 1935 के चुनाव में शामिल हुई और 42 सीटें जीतीं। राज्यों में सरकार बनाई।

केंद्रीय विधान सभा की इमारत वास्तव में अपने पुराने संसद भवन की इमारत ही था जिसकी नींव 12 फरवरी, 1921 को ड्यूक ऑफ कनॉट ने रखी थी और उद्घाटन 18 जनवरी, 1927 को वायसराय लार्ड इरविन ने किया था। इसी इमारत में सदन की कार्यवाही के दौरान 8 अप्रैल, 1929 को सरदार भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट बिल के विरोध में बम फोड़ पर्चे फेंक कर इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाये थे, तब अध्यक्षीय आसन पर विट्ठल भाई पटेल आसीन थे। नया संसद भवन बन जाने के पहले लोक सभा और राज्य सभा की बैठकें यहीं होती थीं। यह भवन 19 सितम्बर, 2023 तक प्रयोग में था और अब संग्रहालय के रूप में शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण जगह बन गया है। क्रांतिकारियों के असीम बलिदान, आजाद हिंद फौज के प्रयास और स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़ती जन सामान्य की सहभागिता और द्वितीय विश्व युद्ध से उपजे हालात से ब्रिटेन ने भारत को स्वतंत्र करने का मन बनाया। तब भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के अनुसार भारत की केंद्रीय विधान सभा और राज्य परिषद (प्रांतों की निर्वाचित असेम्बली) का अस्तित्व समाप्त हो गया और निर्वाचित भारतीय संविधान सभा केंद्रीय विधायिका बन गई। 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिली और 26 जनवरी, 1950 को गणतांत्रिक स्वरूप ग्रहण कर विश्व के सम्मुख विकास पथ पर बढ़ने लगा। एक सौ वर्ष की यह ऐतिहासिक यात्रा हमारी लोकतंत्र के प्रति गहरी समझ, आस्था और निष्ठा की परिचायक है। हमारे मन-मस्तिष्क लोकतंत्र के पावन भावों से सुरभित रहें, यही कामना है।

शिल्प संपन्नता को भी दर्शाते हैं भारतीय ग्रंथ

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक

वेदों में प्रत्येक मंत्र में जिनकी स्तुति होती है, को देवता (विषय) कहा जाता है और जिसने मंत्र के अर्थ का सर्वप्रथम प्रदर्शन किया, ऋषि होता है। पाश्चात्य विद्वान इन्हीं ऋषियों को ही रचयिता मान बैठते हैं। खैर हमारे वेद, पुराण हमारी थाती हैं और इन पर कितनी भी चर्चा हो कम है और बड़ी बात और भी है कि यहाँ रचे मंत्रों के अर्थ भी अनेक हैं जिन्हें लोग अपने-अपने हिसाब से अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साधते हैं जिसका प्रमाण हमें कला के अधिकतर पुस्तकों से प्राप्त होता है। कभी-कभी तो अर्थ भ्रमित और भटके हुए भी होते हैं। बात अब हम कला के बाबत करते हैं जहाँ कला शब्द की उत्पत्ति को ऋग्वेद के-

यथा कलां यथा शफं यथ ऋणं सं नयामसि।

एवा दुस्वप्न्यं सर्वमाप्त्ये सं नयामस्यनेहसो व ऊतय॰ सुऊतयो व ऊतय॰।।

से माना जाता है और आश्चर्य कि अधिकांश कला की पुस्तकें इसी मंत्र को ऋग्वेद में बिना इसके स्थान को बताए बस इस मंत्र को लिखे जा रही हैं जबकि यहाँ प्रयुक्त शब्द कला न होकर कलां है जिसका अर्थ समय के एक-एक पल से किया जा सकता है, कला जैसी कोई बात इस मंत्र में नहीं है, हालांकि इससे पूर्व या बाद में भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से कला या उससे संबंधित गतिविधियों पर चर्चा जरूर है और बड़े विषद रूप में है। अभी तक कला के लिए प्रयुक्त होने वाले इस मंत्र को अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग मायने में इसके अर्थ निकाले हैं। इस मंत्र के देवता आदित्य हैं। ऋग्वेद के 8वें मंडल के 47वें सूक्त के 17वें मंत्र को पं जयदेव शर्मा जी अर्थों के साथ देखा जाए तो-

(यथा) जिस प्रकार हम (कलां सं नयामसि) काल की मात्रा को शनै-शनै व्यतीत करते हैं, (यथा शफं) जिस प्रकार चरण को (सं नयामसि) समान रूप से आगे बढ़ाते हैं और (यथा ऋणं) जिस प्रकार अपने ऊपर के ऋण को (सं नयामसि) अच्छी प्रकार, ईमानदारी से चुका देते हैं, (एवा) इसी प्रकार हम लोग भी (आप्त्ये) आप्त पुरुष (कुशल, विश्वसनीय, ज्ञानी) के अधीन रहकर वा आप्त जनों में विद्यमान रहकर शनै-शनै (दुस्वप्न्यं सं नयामसि) दुस्वप्नादि बुरे प्रभावों से दूर करें।

जबकि डॉ. गंगा सहाय शर्मा जी कहते हैं कि

हे उषा! जिस प्रकार यज्ञ में बली दिए गए पशु के हृदय, खुर सींग आदि अंग क्रम से लिए जाते हैं अथवा जिस प्रकार ऋण धीरे-धीरे दिया जाता है, उसी प्रकार आप्त्यत्रित के सभी बुरे स्थान धीरे-धीरे दूर करो। तुम्हारी रक्षा उपद्रवरहित एवं शोभन है। इस अर्थ को हमारे सामने रखते हैं जबकि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य कलां को चंद्रमा के घटते-बढ़ते कलाओं के साथ जोड़ते हैं।

इससे भी बड़ी समस्या ये है कि यही मंत्र जो ऋग्वेद में है और जिसकी पहली पंक्ति हूबहू उसी रूप में अथर्ववेद के छठे मंडल के 46वें सूक्त के तीसरे मंत्र के रूप में है और अथर्ववेद के ही 19वें मंडल के सत्तावनवे सूक्त का पहला मंत्र भी है। इन तीनों जगहों पर आये इन मन्त्रों के अलग अलग विद्वानों द्वारा दिए गए अर्थ तो अलग हैं ही पर असली समस्या यह है कि ये अर्थ कला के पास तक भी नहीं फटकते और हाँ अगर यह भी देखा जाए कि पहली बार किसी भी अर्थ में सही यहाँ कला शब्द आया है तो फिर इससे बहुत पहले कई-कई बार चित्र शब्द भी आया है तो फिर उसकी चर्चा क्यों नहीं है। प्रमाण के तौर पर - (ऋ 01/35/04)

(देवता सविता, सूर्य)

अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम्।

आस्थाद्रथं सविता चित्रभानु॰ कृष्णा रजांसि तविषिं दधान॰।।

जहाँ यज्ञ के योग्य एवं रंग-बिरंगी किरणों वाले सविता, सूर्य को अपने तेज से लोकों में व्याप्त अंधकार को नष्ट करने के लिए स्वर्ण मूर्तियों से सुशोभित एवं सोने की कीलों वाले विशाल रथ पर सवार हुए बताया गया है (ऋ 01/35/04,गंगा सहाय शर्मा)। इन सभी के अलावा कई जगह ऋभुगण, कुशल, विद्वान शिल्पी का भी जिक्र है।

हमारी थाती ऋग्वेद में शुरू से ही वज्र, चमस, स्वर्ण मूर्तियों से युक्त रथ, पहिए, ऋभुगण आदि का वर्णन मिलने लगता है जो दर्शाता है कि उस समय भी कला को लेकर कितना समृद्ध रहा होगा हमारा समाज हाँ कला का नाम, कला का जिक्र भले ही किसी और नाम से होता रहा होगा या शिल्प ही रहा होगा पर नाम से अधिक उसके होने के प्रमाण से हमें खुश होना चाहिए।

बच्चा जब भी पहली बार कुछ गोंचता या खींचता है तो क्या वो पहले कोई अक्षर, शब्द या काव्य रचता है या आड़ी-तिरछी रेखाएं खींचता है? जाहिर सी बात है आड़ी-तिरछी रेखाएं ही खींचता है तो क्या ये संभव नहीं है कि सृष्टि के रचना के समय जो पहला मनुष्य पग धरा पर पड़ा होगा वो आड़ी-तिरछी रेखाएं नहीं खींचा रहा होगा? हो सकता है उसके पास आज के जैसे हजारों तरीके के टूल्स न रहे हों पर सृजन तो हुआ होगा, उसके अर्थ, महत्व पर ध्यान न रहा हो किसी का पर इससे सृजन पक्ष पर प्रश्न चिन्ह तो नहीं लगाया जा सकता। एक शून्य से यात्रा सृष्टि तक पहुँच सकती है तो क्या कला के बारे में इतना भी नहीं सोचा जा सकता खैर वेद, पुराण कला के प्रमाणों से भरे पड़े हैं हाँ संशय कई दफा मन को परेशान करते हैं। कला में हुए सृजन को लेकर भ्रांतियाँ मन को बेचैन करती हैं पर इससे सर्जक कौन था, माध्यम क्या रहा होगा जैसे प्रश्नों को भले ही बल मिलता हो पर सृजन तो हुआ ही है इसका प्रमाण निश्चित रूप से है। विश्वकर्मा को प्रथम देव शिल्पी माना गया है उधर त्वष्टा नाम है, पद है, विश्वकर्मा जी से पहले के हैं या बाद के हैं जैसे तमाम प्रश्न भी हैं पर कला है।

वृत्तासुर के वध हेतु निर्मित वज्र के निर्माण में त्वष्टा का ही जिक्र है जबकि इंद्र जिन्होंने वज्र को धारण किया था उनके रथ का जिक्र भी बार-बार आया है। हर दिशाओं में सुख पूर्वक जाने वाले रथों का भी जिक्र है-

तक्षन्नासत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम्। (ऋ 01/20/03) यहाँ विद्वान शिल्पी जन सदा सत्य व्यवहार से सब तरफ जाने वाले उत्तम सुखप्रद अवकाश युक्त रमण साधन रथ आदि यान बनाते हैं....(ऋ 01/20/03, पं जयदेव शर्मा) वहीं इसके अगले तीसरे मंत्र-

उत त्यं चमसं नवं त्वष्टुर्देवस्य निष्कृतम्। अकर्त चतुर॰ पुनः ।। (ऋ 01/20/06)

में दानशील, सब पदार्थों के द्रष्टा, विद्वान शिल्पी के उत्तम रीति से बनाए गए शिल्प कार्य को देखकर जिस प्रकार अन्य शिल्पी उसके अनुकरण में बहुत से पदार्थ बना लेते हैं....(ऋ 01/20/06, जयदेव शर्मा,) का जिक्र तब के कला संपन्नता को उजागर करता है। सम्पन्नता का परिचायक है। शिल्पियों के विद्वता, संपन्नता आदि को भी दर्शाता है। रथ है तो जाहिर सी बात है रथकार भी रहे होंगे। स्वतंत्र रूप से भी उनका अस्तित्व रहा होगा या फिर त्वष्टा, विश्वकर्मा आदि से जुड़ाव भी हो सकता है। ऋग्वेद के ही पांचवें मंडल के पचहत्तरवें सूक्त के पहले मंत्र में रथों के दर्शनों का बृहद रूप से वर्णन हुआ है जहाँ लौह, लौह से निर्मित डिजाइन आदि की भी चर्चा की गुंजाइश नजर आती है।

अश्विन कुमारों के लिए मंत्र में (ऋ 01/116/15,गसश) विश्पला हेतु लोहे से पैर को बनाने का भी जिक्र है। चित्र साभार गूगल से है।

बहुत कुछ कहना चाहते थे अच्युत पोतदार

स्मृति शेष
विनोद नागर
वरिष्ठ फिल्म समीक्षक एवं सिने अध्येता

कोई डेढ़ दशक पूर्व राजकुमार हिरानी की बहुचर्चित फिल्म 'थ्री इडियट्स' ने हमारी मौजूदा शिक्षा प्रणाली और मध्यमवर्गीय सामाजिक सरोकारों की ऐसी धज्जियाँ उड़ाई थी कि लोग देखते ही रह गये थे। साहित्य की जगह सिनेमा ने समाज के दर्पण की भूमिका अख्तियार कर ली थी। इस फिल्म में टीचर व स्टूडेंट की भूमिका में अच्युत पोतदार का आमिर खान को संबोधित एक संवाद बहुत लोकप्रिय हुआ था- अरे, तुम कहना क्या कहते हो..? इस साधारण से संवाद ने उस ज़माने में युवाओं में इतना क्रेज़ पैदा कर दिया था कि आज भी उसके 'मीम' सोशल मीडिया में प्रचलित हैं।

नई पीढ़ी को 'ठीक से कहने' का अंदाज़ सिखाने की हसरत लिये वही अच्युत पोतदार सोमवार 18 अगस्त को मुम्बई में परलोक सिधार गये। उम्रगत स्वास्थ्य समस्याओं के चलते ठाणे के जुपिटर अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। वे अगर दो-चार दिन और रुक जाते तो 91 साल के हो जाते। 22 अगस्त 1934 को मध्य प्रदेश के जबलपुर में एक मराठी ब्राह्मण परिवार में जन्में और इन्दौर में पले-बढ़े अच्युत पोतदार ने 1961 में अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। उनका परिवार इन्दौर में रामबाग क्षेत्र के मार्तंड चौक में रहता था। यायावर पत्रकार वसंत पोतदार उनके छोटे भाई थे।

अलबेले पत्रकार मित्र और इंदूर के मराठी मानुस पंकज क्षीरसागर बताते हैं- पढ़ाई पूरी करने के बाद अच्युतजी ने कुछ समय रीवा में कॉलेज व्याख्याता/ असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान उन्होंने भारतीय सेना में आपातकालीन कमीशन के तहत अपनी सेवाएँ दी और 1967 में कैप्टन के पद से सेवानिवृत्त हुए। इसके बाद उन्होंने करीब ढाई दशक तक इंडियन ऑइल कॉर्पोरेशन में नौकरी की और डिप्टी मैनजर से लेकर जनरल मैनेजर तक का सफ़र तय किया।

नौकरी में रहते हुए ही अभिनय का पुराना शौक परवान चढ़ा और 44 वर्ष की उम्र में उन्हें पहली बार फिल्मों में काम करने का मौका मिला। गोविन्द निहलानी की पहली फिल्म 'आक्रोश' (1980) के जरिये फिल्मों में उनके एक्टिंग कैरियर की शुरुआत हुई। इस फिल्म में नसीरुद्दीन शाह, ओम पुरी और स्मिता पाटिल जैसे कलाकारों के साथ काम करने का अवसर उन्हें मिला। सईद अख्तर मिर्ज़ा की अलबर्ट पिन्टो को गुस्सा क्यों आता है (1980) उनकी उसी वर्ष प्रदर्शित दूसरी फिल्म थी।

नेशनल फिल्म डेवलपमेंट कारपोरेशन द्वारा निर्मित और दिलीप चित्रे निर्देशित गोदाम (1983) में उनके उम्दा अभिनय की झलक देखने को मिली थी। देवदासी प्रथा के खिलाफ जन आन्दोलन पर केन्द्रित गिद्ध (1984) नासूर (1985) अरुणा राजे की रिहाई (1988) और सई परांजपे निर्देशित दिशा (1990) में भी उनके अभिनय को सराहा गया। सई परांजपे के निर्देशन में बनी दिशा (1990) में उन्होंने एक बीड़ी कारखाने के मालिक का किरदार अदा किया था, जो कर्ज में डूबी महिला श्रमिकों के शोषण के लिये उद्यत रहता है।

सामानांतर फिल्मों के दौर की इन महत्वपूर्ण फिल्मों में अच्युत पोतदार का मंजा हुआ अभिनय उन्हें समकालीन सशक्त अभिनेताओं में स्थान दिलाता है। तीन-चार दशक पुरानी ये फ़िल्में आज भी ओटीटी प्लेटफार्म पर आसानी से देखी जा सकती है। गोविन्द निहलानी की राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्म 'आक्रोश' के बाद की सभी फिल्मों- विजेता (1982) अर्द्ध सत्य (1983) आघात (1985) द्रोहकाल (1994) देव (2004) में अच्युत पोतदार अनिवार्यतः नज़र आये। उनका इसी तरह का तादात्म्य विधु विनोद चोपड़ा के साथ भी बना रहा। विधु की पहली फिल्म सजा-ए-मौत (1981) से जुड़ा सिलसिला परिंदा (1989) से लेकर लगे रहो मुन्नाभाई (2006) थ्री इडियट्स (2009) और फरारी की सवारी (2012) तक निरंतर बना रहा।

करीब चार दशक तक रंगमंच, सिनेमा और टेलीविजन में सक्रिय रहे अच्युत पोतदार ने दर्शकों के सम्मुख अपनी बहुमुखी प्रतिभा के नये आयाम पेश किये। उन्होंने हिन्दी और मराठी की 125 से अधिक फिल्मों में काम किया। उनकी उल्लेखनीय फिल्मों में थ्री इडियट्स (2009) के अलावा दबंग-2 (2012) फरारी की सवारी (2012) भूतनाथ (2008) और लगे रहो मुन्ना भाई (2006) परिणीता (2005) आदि को गिना जा सकता है। हाल के वर्षों में उन्हें दर्शकों ने सईद अख्तर मिर्ज़ा की एक ठो चांस (2009) प्रभु देवा की आर राजकुमार (2013) और रवींद्र गौतम की इक्कीस तोपों की सलामी (2014) में देखा।

अच्युत पोतदार को सूरज बड़जात्या (हम साथ साथ हैं) महेश मांजरेकर (वास्तव) इंद्र कुमार (इश्क) प्रकाश झा (मृत्युदंड) राम गोपाल वर्मा (रंगीला) राजकुमार संतोषी (दामिनी) राजीव मेहरा (चमत्कार) अज़ीज़ मिर्ज़ा (राजू बन गया जेंटलमैन) और एन चंद्रा (तेज़ाब और नरसिम्हा) सरीखे सुधि निर्देशकों की फिल्मों में निभाये गये किरदारों की खातिर भी याद रखा जाएगा। नाना पाटेकर अभिनीत युग पुरुष और यशवंत में अच्युत पोतदार ने बेहद संजीदा रोल अदा किये।

शशिलाल नायर की अंगार (1992) तथा ग्रहण (2001) में उनकी अहम् भूमिका थी। नाना पाटेकर, ऋषि कपूर, असरानी और सतीश कौशिक जैसे अभिनेताओं द्वारा निर्देशित फिल्मों- 'प्रहार' 'आ अब लौट चलें' 'उड़ान' तथा 'कर्ज़' में भी उनके अभिनय को सराहना मिली। 'जाने भी दो यारों' से अपार ख्याति पाने वाले कुंदन शाह की कॉमेडी फिल्म 'एक से बढ़कर एक' (2004) में एडवोकेट नाडकर्णी के किरदार को उन्होंने अपने अंदाज़ में मुखर बनाया।

अच्युत पोतदार ने आशिक 'आवारा' 'हस्ती' 'शतरंज' 'एलान' 'दिलवाले' 'ये दिल्लगी' 'सुरक्षा' 'आन्दोलन' 'गुंडाराज' 'अग्नि साक्षी' 'शस्त्र' 'सनम' 'शपथ' 'औज़ार' 'कीमत' 'न्यायदाता' 'दाग॰ द फायर' 'गैर' 'दहक' 'खौफ' 'आगाज़' 'फ़र्ज़' 'हम हो गये आपके' 'दिल है तुम्हारा' 'रिश्ते' 'धुंद' 'ये दिल' 'क़यामत' 'पुलिस फ़ोर्स' 'वादा' 'पहचान' और 'तीसरी आँख' जैसी औसत व्यावसायिक फिल्मों में भी काम किया, लेकिन अभिनेता के रूप में इन फिल्मों से उनकी साख में कोई इज़ाफा नहीं हुआ।

शुरूआती दौर में समानांतर फिल्मों के तमाम अग्रणी कलाकारों- ओम पुरी, अमरीश पुरी, नसीरुद्दीन शाह, कुलभूषण खरबंदा, के.के. रैना, पंकज कपूर, सदाशिव अमरापुरकर, मोहन अगाशे, स्मिता पाटिल, शबाना आज़मी आदि के साथ उन्होंने काम किया। फिल्मोद्योग में पैर ज़माने के बाद उन्हें मुख्य धारा की व्यावसायिक फिल्मों में अमिताभ, धर्मेन्द्र, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, हेमा मालिनी, रेखा, डिम्पल कपाड़िया, मिथुन चक्रवर्ती से लेकर सनी देओल, संजय दत्त, अनिल कपूर, और जैकी श्रॉफ जैसे सितारों के साथ चरित्र अभिनेता के रूप में अभिनय के जौहर दिखाने के मौके मिले।

रुपहले परदे पर उन्होंने मिनाक्षी शेषाद्री, मनीषा कोइराला, माधुरी दीक्षित, रवीना टंडन, जूही चावला से लेकर उर्मिला मातोंडकर, काजोल, प्रीति जिंटा, विद्या बालन और सोनाक्षी सिन्हा के पिता के किरदारों में अलग-अलग रंग भरे। खान त्रयी के रोशन सितारों- सलमान खान, शाहरुख़ और आमिर के साथ रुपहले परदे पर अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई। नये दौर में अक्षय कुमार, सुनील शेट्टी, सैफ अली खान, गोविंदा, अजय देवगण, शाहिद कपूर के साथ काम करते हुए उन्होंने कादर खान, अनुपम खेर, परेश रावल आदि समकालीन चरित्र अभिनेताओं के साथ मिले अवसरों का पूरा लुत्फ़ उठाया।

अच्युत पोतदार ने मराठी रंगमंच को भी समृद्ध किया। सत्यदेव दुबे, विजया मेहता, सुलभा देशपांडे जैसे दिग्गज रंगकर्मियों के साथ उनकी खूब बनती थी। जिन टीवी धारावाहिकों में उनकी भूमिका प्रमुखता से रेखांकित हुई, उनमें 'भारत एक खोज' 'वागले की दुनिया' 'प्रधान मंत्री' 'ये दुनिया गज़ब की' 'ऑल द बेस्ट' 'आहत' 'आन्दोलन' 'मिसेज तेंदुलकर' 'माझा होशील ना' 'अगले जनम मोहे बिटिया ही कीजो' 'शुभ मंगल सावधान' आदि शामिल हैं। 'प्रधान मंत्री' और 'आन्दोलन' नामक टीवी धारावाहिकों में उन्होंने लोक नायक जय प्रकाश नारायण का किरदार निभाया था। उन्होंने दो दर्जन से अधिक नाटकों में काम किया और ढेर सारी एड फ़िल्में भी की।

मुम्बई में इंडियन ऑइल कारपोरेशन में उनके मातहत काम कर चुकीं लेखिका, फिल्म और रंगमंच अभिनेत्री विभा रानी के अनुसार हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी तीनों भाषाओँ पर पर उनका समान अधिकार था। उनकी आवाज़, उच्चारण, मुस्कान और विट को याद करते हुए वे कहती हैं- दफ्तर के कार्यक्रमों में वे कमाल की एंकरिंग करते थे। उनकी अनुपस्थिति में ही मुझे एंकरिंग के लिये बुलाया जाता था। सादगी, समर्पण और अभिनय के प्रति जुनून के लिए अच्युत पोतदार को हमेशा याद किया जाएगा।

इन्दौर में साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों को बढ़ावा देने वाली अग्रणी संस्था सानंद न्यास ने वर्ष 2015 में स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित समारोह में अच्युत पोतदार को सानंद जीवन गौरव सम्मान से सम्मानित किया था। 2021 में उन्हें 'ज़ी मराठी' चैनल द्वारा 'जीवन गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

अपने स्टूडेंट्स से झल्लाकर अरे, तुम कहना क्या कहते हो.. पूछने वाला कलाकार वास्तविक जीवन में युवा पीढ़ी का सबसे बड़ा हमदर्द था।

नये उभरते हुए कलाकारों की मदद के लिये अच्युत पोतदार सदैव तत्पर रहे। उन्होंने हिन्दी व मराठी सिनेमा, टीवी और रंगमंच पर जो अमिट छाप छोड़ी है, वह आने वाले समय में भावी पीढ़ी को सदैव प्रेरित करती रहेगी।

खुफिया जासूसों की तथ-कथा कहती एक वेब सीरीज

वेब सीरीज समीक्षा
आदित्य दुबे,
लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

ऐसीमा पर देश की सुरक्षा के लिए लड़ने वाले जाँबाजों के किस्से हमेशा बड़े गर्व के साथ सुनाए जाते हैं, मगर कुछ योद्धा ऐसे भी होते हैं, जिनका कोई शौर्य गान नहीं होता। उनके साहस और बुद्धिमत्ता की कहानी कहीं दर्ज नहीं होती। ये गुमनाम हीरो हैं, वे खुफिया जासूस जो देश पर आने वाले हर खतरे को रोकने के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने को हमेशा तैयार रहते हैं। ऐसे ही जासूसों की कहानी है, वेबसिरीज़ सारे जहाँ से अच्छा । अभी जब हमने देश की आजादी की उनहत्तरवीं वर्षगांठ मनाई है तब इस सिरीज़ की रिलीज़ काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है । खुफिया जासूसों की तथा-कथा कहती इस वेब सिरीज़ में दर्शकों को बाँधे रखने के कई तत्व हैं और कतिपय खामियों के बाद भी यह एक व्यवस्थित वेबसिरीज़ है ।

सुमित पुरोहित निर्देशित सच्ची घटनाओं से प्रेरित इस सिरीज़ को विवाद से बचाने के लिये इसके साथ- यह एक काल्पनिक कहानी है का अस्वीकरण जोड़ा है । सिरीज़ की शुरुआत रोचक है। देशभक्ति से आप्लावित यह सिरीज जासूसों की चुनौतीपूर्ण जिंदगी पर रोशनी डालती है। कहानी तेज रफ्तार से आगे बढ़ती है, जो दर्शकों को बाँधे रखती है। अच्छी बात यह है कि लेखकों ने रॉ के विष्णु शंकर की तरह आईएसआई एजेंट मुर्तजा के चरित्र को भी उतना ही मजबूत रखा जिससे इन दोनों के टकराव, उनकी कैरियर यात्राऔर फैसलों में रुचि बनी रहती है। लेकिन अफसोस यह रुचि आखिर तक नहीं बनी रहती। अपने नायक की जीत के चक्कर में मिशन के सबसे अहम मोड़ पर मुर्तजा को जिस तरह नकाराओं की तरह सिर्फ परेशान होते दिखाया गया है, वह उसके और कहानी के रोमांच दोनों के साथ नाइंसाफी लगती है। इस वजह से क्लाइमैक्स थोड़ा कमजोर रह गया है। इसके अलावा, विष्णु जिस तरह बहुत सारी बातें लगातार कमेंट्री करके समझाता है, वो भी अखरता है।

इस सिरीज़ की कहानी में रॉ के मुखिया काओ को जब पता चलता है कि वर्ष 1971 के युद्ध में करारी हार झेलने वाले पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो इसका बदला लेने के लिए परमाणु बम बनाने की जुगत भिड़ा रहे हैं । इसके लिए पाकिस्तान में बहुत बड़े स्तर पर गोपनीय मिशन चालू है, जिसे सफलतापूर्वक अंजाम देने का जिम्मा मिलता है, वहाँ की खुफिया एजेंसी आईएसआई के तेज तर्रार अफसर मुर्तजा मलिक को। जबकि पाकिस्तान के इस मिशन को नाकाम करने की जिम्मेदारी होती है विष्णु शंकर की। मुर्तजा और विष्णु का यह द्वंद्व पटकथा में बड़ी कुशलता से बुना गया है ।

प्रतीक गाँधी, रजत कपूर, तिलोत्तमा शोम जैसे मँजे हुए कलाकार इस सिरीज़ में हैं , जो किसी भी चरित्र को परदे पर कुशलता से प्रस्तुत कर सकते हैं और उन्होंने इस सिरीज़ में ऐसा ही किया भी है । प्रतीक इस बार भी अपने भूमिका में खरे उतरे हैं। वहीं, रजत कपूर और तिलोत्तमा शोम जब-जब परदे पर आये उन्होंने अपना असर छोड़ा लेकिन सबसे

अव्वल साबित हुए - सनी हिंदुजा। सनी ने मुर्तजा के जिस चरित्र को धार दी है, जिस तरह उर्दू लहज़े को पकड़ा वो वाकई पाकिस्तान के आला अफसर लगते हैं।अभिनय में जासूस सुखबीर की भूमिका निभाने वाले सुहैल नायर को इस भूमिका में संवेदनशीलता दर्शाने के अच्छे अवसर? मिले जिसका उन्होंने भरपूर फायदा उठाया है। अनूप सोनी, कृतिका कामरा, कुणाल ठाकुर, निनाद कामत जैसे कलाकारों ने भी अपनी भूमिका से न्याय किया है।

तकनीकी पक्ष की बात करें, तो इस मामले में भी सीरीज मजबूत है। इसकी सेटिंग, प्रॉडक्शन वैल्यू, एडिटिंग, सिनेमेटोग्राफी, बैकग्राउंड म्यूजिक बढ़िया है।बैकग्राउंड म्यूज़िक और कुछ डायलॉग देशभक्ति का जोश बढ़ाते हैं, लेकिन जासूसी-थ्रिलर के मामले में यह कुछ नया नहीं देती। बहरहाल दर्शकों को? यह सिरीज़ काफी भायेगी ।

सादगी, लचीलापन और संतोष का जीवन

स्मृति शेषः अच्युत पोतदार
यशवंत गोरे
लेखक साहित्यकार हैं।

ऐसे लोग बिरले ही होते है जो बड़ी ज़िम्मेदारी और अपनी मेहनत से खुद को एक बेहतरीन इंसान, एक बेहतरीन कलाकार में रूप में ढाल लेते है । इसी कतार में एक अहम नाम है दिग्गज अभिनेता अच्युत पोतदार का। जिनका निधन हाल ही में 18 अगस्त को हो गया। वे जीवित रहते तो चार दिन बाद अपना 91 वां जन्मदिन मनाते।अच्युत पोतदार ने पिछले वर्ष 24 अगस्त 2024 को मुंबई के जुहू में आर्मी क्लब में अपना 90वां जन्मदिन मनाया था। इस मौके पर उनकी बेटी अनुराधा पारस्कर द्वारा लिखी गई बायोग्राफी अच्युत पोतदार- सादगी, लचीलापन और संतोष का जीवन का विमोचन किया गया था। किताब का अनावरण अभिनेता जैकी श्रॉफ ने किया था। इस जन्मदिन को आमिर खान, जैकी श्रॉफ, विद्या बालन और अन्य कई सितारों की उपस्थिति ने काफी खास बना दिया था।ऐसा कहा जाता है कि व्यक्तित्व का निर्माण अक्सर उसके परिवेश पर निर्भर करता है। मध्य प्रदेश के इंदौर में पले-बढ़े पोतदार वहाँ के सांस्कृतिक परिवेश, खासकर नाटककारों, कलाकारों और साथियों के साथ निरंतर उपस्थिति से भी प्रभावित थे। (उनके छोटे भाई स्व. वसंत पोतदार इंदौर रामबाग क्षेत्र के मार्तण्ड चौक में में निवासरत और प्रसिद्ध प्रखर वक्ता, लेखक , पत्रकार एवं एकल अभिनय भी करते थे।) हालांकि उनकी अभिनय प्रतिभा के बीज उसी समय पड़ चुके थे, लेकिन एक कलाकार के रूप में रंगमंच में उनका वास्तविक प्रवेश बहुत बाद में हुआ। यद्यपि उनका उनका जन्म पर्यटन स्थल मां रेवा- नर्मदा के भेड़ाघाट की वजह से विश्व प्रसिद्ध जबलपुर शहर में 22 आगस्त 1934 को हुआ था। इंदौर में रहते हुए, 13 वर्ष की आयु में, उन्होंने अपने मित्रों के साथ बालोत्कर्ष मंडल की स्थापना की और मामूली शुल्क पर नाटकों का मंचन और दर्शकों के सामने उनका प्रदर्शन शुरू किया। नाटक और साहित्य, दोनों ही उनकी शिक्षा और बाद में स्नातकोत्तर शिक्षा की यात्रा में उनके साथ रहे। अर्थशास्त्र में एम.ए. करने के बाद, अच्युत पोतदार ने पहले मध्य प्रदेश में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया।उसी दौरान भारत-चीन का युद्ध छिड़ गया था। तब राष्ट्रभक्ति से लबरेज तेजतर्राट युवा अच्युत ने इमरजेंसी कमिशन के जरिये भारतीय सेना में भर्ती हो गये थे। फ़ौज में वे कैप्टन थे। 1968 में सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद, वे इंडियन ऑयल कंपनी में शामिल हो गए और वहाँ उनके भीतर का कलाकार एक बार फिर जागा। उन्होंने पंडित सत्यदेव दुबे से अभिनय की शिक्षा लेनी शुरू की। फिर प्रसिद्ध नाटककार विजया मेहता के साथ उन्हें वाडा चिरेबंदी जैसे लोकप्रिय नाटक में काम मिला। बाद में वे आविष्का नाट्य संस्था से जुड़ गए। उसी समय ÷दुबे यांचा शिष्य ÷ फिल्म में भी छोटी-मोटी भूमिकाएं मिलीं। अपनी कला को निखारते हुए, उन्होंने अपने परिवार को नजरअंदाज नहीं किया, वे ईमानदारी से नौकरी के करते रहे साथ ही और शनिवार और रविवार को नाटकों में अभिनय करते रहे। यह क्रम उन्होंने तब तक अपनाया जब तक वे नौकरी से सेवानिवृत्त नहीं हो गए। यह कहना गलत नहीं होगा कि कला के प्रति उनकी यही ईमानदारी और जीवन के प्रति उनका अनुशासन उन्हें चरित्र अभिनेताओं की भीड़ में भी अलग खड़ा करता है । विज्ञापन हो या फिल्म; अगर फिल्म है, तो आपके किरदार की भूमिका बिना किसी झंझट के कितनी है, उस भूमिका में आपकी अटूट क्षमता कितनी है? उन्होंने एक बदलाव लाने की कोशिश की। इसलिए अंगार में जग्गू, ए जग्गू में बच्चे के पीछे पड़े पिता की भूमिका से लेकर थ्री इडियट्स में प्रोफेसर की छोटी सी भूमिका तक, हर छोटी-बड़ी भूमिका में उन्हें दर्शकों ने याद रखा।थ्री इडियट्स के अरे कहना क्या चाहते हो जैसा सवांद तो सोशल मीडिया की मीम पर सर्वाधिक लोकप्रिय है। 44 साल के एक्टिंग करियर में अच्युत पोतदार ने 125 से ज्यादा हिंदी और मराठी फिल्मों, 95 टीवी शो, 26 प्ले और 45 एड में काम किया है।

सहायक भूमिकाओं में, उन्होंने राजू बन गया जेंटलमैन, दामिनी, लाइटनिंग, रिश्ते, भूतनाथ और दबंग -2 जैसी फिल्मों में काम किया है। अपने सहज अभिनय के कारण वे विधु विनोद चोपड़ा और राजकुमार हिरानी जैसे बड़े निर्देशकों के पसंदीदा अभिनेता थे।

विधु विनोद चोपड़ा की लगभग हर फिल्म में उनका रोल तय होता था। टीवी चैनलों की फिल्मों और सितारों की फिल्मों में भी वे चरित्र अभिनेता के रूप में लोगों की पसंद बने रहे। नब्बे साल की उम्र तक भी उन्होंने उसी उत्साह, ईमानदारी और संतोष के साथ जीवन को भरपूर जीने का कोई मौका नहीं छोड़ा।

कारगिल चौक पर झंडा लगाने और थाने में धरने को लेकर 16 कांग्रेसियों पर केस दर्ज

बैतूल। बैतूल जिला कांग्रेस अध्यक्ष निलय डागा के स्वागत के दौरान कारगिल चौक पर पार्टी का झंडा लगाने से हुआ विवाद अब और बढ़ गया है। इस मामले में कोतवाली पुलिस ने श्री डागा समेत 16 कांग्रेसियों पर सरकारी काम में रुकावट डालने का केस दर्ज किया है। दरअसल, 18 अगस्त को जिला कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार बैतूल पहुंचे श्री डागा का जोरदार स्वागत किया गया था। जगह-जगह स्वागत द्वार और झंडे लगाए गए थे। इसी दौरान कारगिल चौक पर कांग्रेस का झंडा लगाने को लेकर भाजपा नेता सतीश बड़ोनिया और शहर कांग्रेस अध्यक्ष मोनू बड़ोनिया व पार्षद उमाशंकर दीवान के बीच बहस हो गई। आरोप है कि झगड़े में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भाजपा नेता के साथ मारपीट भी की। इसके बाद भाजपा नेताओं ने कोतवाली थाने जाकर विरोध जताया और पुलिस ने मोनू बड़ोनिया व उमाशंकर दीवान पर केस दर्ज कर लिया। इसकी खबर लगते ही जिला कांग्रेस अध्यक्ष डागा, कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ कोतवाली थाने पहुंच गए और मुख्य द्वार पर करीब तीन घंटे तक धरना दिया। उन्होंने भाजपा नेता के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की थी। कांग्रेस नेताओं का आरोप था कि भाजपा नेता ने कारगिल चौक स्मारक से सरकारी झंडा हटाया है। हालांकि बाद में एसडीओपी ने उन्हें सीसीटीवी फुटेज दिखाया, जिसमें साफ हुआ कि बड़ोनिया ने सरकारी नहीं बल्कि कांग्रेस का झंडा हटाया था।

सब्जी बेचने वाले को बाइक ने टक्कर मारी, मौत

बैतूल। आमला में सब्जी बेचकर आ रहे एक व्यक्ति को बाइक ने टक्कर मार दी। घटना के एक दिन बाद उसकी मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार शाम पंखा मार्ग पर सडक़ हादसा हो गया था। जुनापानी साईखेड़ा निवासी मुन्ना पिता फगना कवड़े (52) सब्जी बेचकर आमला से घर लौट रहे थे। इसी दौरान तेज रफ्तार पल्सर बाइक ने उन्हें टक्कर मार दी। हादसे में वे गंभीर रूप से घायल हो हुए थे। चश्मदीदों ने बताया कि टक्कर इतनी तेज थी कि मुन्ना कवड़े सडक़ पर गिरकर बुरी तरह घायल हो गए। मौके पर मौजूद लोगों ने तत्काल एम्बुलेंस बुलाकर उन्हें जिला अस्पताल भिजवाया। वहां देर रात तक इलाज चलता रहा, लेकिन शनिवार उनकी मौत हो गई। मुन्ना कवड़े घर के अकेले कमाने वाले थे। उनकी शादी हो चुकी थी और परिवार का भरण-पोषण उन्हीं पर निर्भर था। अचानक हुई इस घटना से परिजनों में मातम पसरा हुआ है। पुलिस ने शव का पीएम कर परिजनों को सौंप दिया है। आमला पुलिस ने हादसे की डायरी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ब्रह्माकुमारीज भाग्यविधाता भवन में विशाल रक्तदान शिविर आज

बैतूल। ब्रह्माकुमारीज भाग्यविधाता भवन बटामा, बैतूल में आज रविवार 24 अगस्त को सुबह 9 बजे से 12 बजे तक रक्तदान शिविर का आयोजन होगा। ब्रह्माकुमारीज बैतूल सेवाकेंद्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी मंजू दीदीजी ने बताया कि यह अभियान केवल रक्त एकत्रित करने के लक्ष्य से नहीं अपितु सहयोग, करुणा, प्रेम और सेवा भाव जैसे मानवीय मूल्यों की जागृति के लक्ष्य को लेकर रखा गया है जिसमें हम धर्म,जाती,भाषा,रंग आदि दायरों से उठकर मानवता की भावना से किसी को जीवन देने का पुनीत कार्य कर सकते है। विश्वव्यापी आध्यात्मिक संस्थान ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के 18वीं स्मृति दिवस को विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा संपूर्ण भारतवर्ष में रक्तदान अभियान का आयोजन किया गया है। इस आयोजन के विषय में मंजू दीदी ने बताया कि हर दिन हजारों लोग केवल इसीलिए अपनी जान गवा देते हैं क्योंकि उन्हें समय पर रक्त नहीं मिल पाता। हर 3 सेकंड में एक व्यक्ति को रक्त की आवश्यकता होती है। इस संकट से लडऩे के लिए आप सभी से हम विनम्र अपील करते हैं कि आप ब्रह्माकुमारीज के द्वारा चलाए जाने वाले विशाल रक्तदान अभियान का हिस्सा बने और इस मानवीय कार्य में सहयोगी बने। इस अभियान में रक्तदान कर अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करे। आपका एक यूनिट रक्त किसी का जीवन बचा सकता है।

मप्र कर्मचारी मंच ने जनजातीय कार्य मंत्री को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। मध्यप्रदेश शासन के जनजातीय कार्य विभाग के केबिनेट मंत्री डॉ. विजय कुवर शाह को प्रदेश के दैनिक वेतन भोगी एवं अंशकालीन मजदूर कर्मचारियों ने अपनी तीन सूत्रीय जायज मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। कर्मचारियों का कहना है कि उनकी मांगें लंबे समय से सरकार के समक्ष लंबित हैं, लेकिन अब तक न तो विभाग के आयुक्त ने उन्हें संज्ञान में लिया और न ही किसी स्तर पर समाधान हुआ है।

मप्र कर्मचारी मंच ने बताया कि प्रदेशभर में कार्यरत दैनिक वेतन भोगी और अंशकालीन कर्मचारी लगातार जिला स्तर से लेकर प्रदेश स्तर तक ज्ञापन देकर अपनी आवाज उठा रहे हैं। कर्मचारियों की प्रमुख मांग है कि जनजातीय कार्य विभाग में 10 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके अंशकालीन कर्मचारियों को नियमित किया जाए और कार्यरत अंशकालीन कर्मचारियों को कलेक्टर रेट पर वेतन दिया जाए।

भूमिपूजन के डेढ़ से दो माह बाद भी चौराहों के चौड़ीकरण और सौंदर्यीकरण का काम शुरू नहीं

नपा का तर्क: बारिश की वजह से हो रही देरी, जल्द होगा काम शुरू

बैतूल। शहर के प्रमुख चौक-चौराहों के सौंदर्यीकरण और चौड़ीकरण के साथ गंज क्षेत्र में सीसी रोड निर्माण होना था। इन कार्यों का भूमिपूजन करीब डेढ़ माह पहले हुआ था, लेकिन अभी तक काम शुरू नहीं हो सका है। लगभग सात करोड़ रुपए की लागत वाले इन प्रोजेक्टों को लेकर नगर पालिका अधिकारियों का कहना है कि वर्क ऑर्डर जारी कर दिया है, लेकिन बारिश की वजह से काम शुरू करने में देरी हो रही है। ऐसे में, यदि सितंबर के बाद काम शुरू हुआ, तो नवरात्रि और दीपावली जैसे बड़े त्योहारों में खुदाई और निर्माण के चलते आमजन की मुश्किलें और बढ़ेगी। दरअसल नगरपालिका ने चौराहों के चौड़ीकरण, विस्तार का प्रपोजल और डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने में बेहद तेजी दिखाई। मई में प्रपोजल भेजा, इसे नगरीय प्रशासन से मंजूरी भी मिल गई। टेंडर भी तुरंत कर दिए, लेकिन टेंडर होने के बाद भी नपा काम शुरू नहीं करवा पा रही है। जानकार बताते है कि देरी की मुख्य वजह बारिश के साथ-साथ शहर में बन रही व्हाइट टॉपिंग सडक़ भी है। यह सडक़, मौजूदा सडक़ से सात इंच ऊंची बनाई जा रही है और तीन-चार प्रमुख चौराहों से होकर गुजरती है। इस वजह से भी चौराहों के चौड़ीकरण और सौंदर्यीकरण के काम में देरी हो रही है।

सीसी रोड प्रोजेक्ट भी ठप पड़ा- पिछले महीने गंज क्षेत्र में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमंत खंडेलवाल ने दो करोड़ रुपए की लागत से सीसी रोड निर्माण का भूमिपूजन किया था। यह काम भी अब तक शुरू नहीं हुआ है। नगर पालिका अधिकारियों का कहना है कि बारिश के बाद काम तेज़ी से शुरू होगा। गंज क्षेत्र

के व्यापारियों का कहना है कि दो महीने से सिर्फ बहाने सुन रहे हैं। अगर त्योहारों में खुदाई शुरू हुई तो ट्रैफिक जाम और भी बढ़ेगा। ये विकास का काम है या जनता की परेशानी बढ़ाने की तैयारी। स्थानीय लोगों का कहना है कि सितंबर के बाद नवरात्रि और दीपावली जैसे बड़े त्योहार शुरू हो जाएंगे। ऐसे में निर्माण कार्य से यातायात व्यवस्था बिगड़ेगी।

कोठीबाजार में पार्किंग की बढ़ रही समस्या- कोठीबाजार क्षेत्र में पार्किंग की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, लेकिन गांधी चौक पर बनने वाली अंडरग्राउंड पार्किंग का काम अब तक शुरू नहीं हुआ। नगर पालिका ने करीब दो करोड़ रुपए की लागत वाले इस प्रोजेक्ट का भूमिपूजन तो कर दिया, लेकिन महीनों बाद भी ज़मीन पर एक ईंट तक नहीं रखी गई। नगरपालिका का तर्क है कि बारिश के मौसम के कारण काम शुरू नहीं हो सका और अब त्यौहारी सीजन आड़े आएगा। यदि गांधी चौक जैसे व्यस्त इलाके में अंडरग्राउंड पार्किंग बनती है तो लोगों को वाहन पार्क करने में राहत मिलेगी, लेकिन प्रोजेक्ट लटकने से नाराजगी बढ़ रही है। नागरिकों का आरोप है कि नपा केवल घोषणाओं और भूमिपूजन तक सीमित है।

चौक-चौराहों पर गड्ढों से लोग परेशान- शहर के अधिकांश चौराहों के हालात ऐसे हैं कि वाहन यहां पर आते ही गड्ढों में फंस जाते हैं, अनियंत्रित होकर वाहन चालक खुद को दुर्घटनाग्रस्त होने से बचा रहे हैं। कई बार वाहनों में टूट-फूट भी हो जाती है। बता दे कि परशुराम चौराहे के आसपास कलेक्टर बंगले के सामने की जमीन, कॉलेज की ओर की जमीन, ताप्ती क्लब के सामने चौराहे से सटी खाली पड़ी जमीन तक चौराहे का विस्तार किया जाना है। गंज के चौक का भी चौड़ीकरण किया जाएगा। बीच में जो जगह है उसे भी भव्य बनाया जाएगा। कोठी बाजार का भी चौड़ीकरण किया जाएगा। इस चौराहे पर आसपास अतिक्रमण पैर पसार चुका है। यहां से भी अतिक्रमण को हटाया जाना है।

इनका कहना है -

चौराहों के चौड़ीकरण और सौंदर्यीकरण के टेंडर और वर्क ऑर्डर जारी किये जा चुके है। बारिश की वजह से काम शुरू नहीं हो पाया है। जैसे ही बारिश थम जायेगी, काम तेजी से पूरा किया जायेगा।

- सतीश मटसेनिया,
सीएमओ नगरपालिका बैतूल

कलेक्टर ने किया सडक़ निर्माण का निरीक्षण, ट्रैफिक के सुचारू संचालन के दिए निर्देश

बैतूल। कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने शुक्रवार शाम को जिले मुख्यालय स्थित प्रगतिरत व्हाइट टॉपिंग सडक़ निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों से कार्य की प्रगति की जानकारी ली। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि निर्माण कार्य के दौरान यातायात प्रभावित न हो,

इसके लिए सडक़ के शोल्डर भराव का कार्य शीघ्र पूर्ण किया जाए। साथ ही उन्होंने कहा कि सडक़ निर्माण पूरी गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय सीमा में पूरा होना चाहिए। उन्होंने यातायात पुलिस को भी निर्देशित किया कि यातायात बाधित न हो। गौरतलब है कि जिले मुख्यालय में थाना कोतवाली से लल्ली चौक तथा जेल मार्ग से चौपाटी तक लगभग 3 करोड़ रुपये की लागत से व्हाइट टॉपिंग सडक़ का निर्माण कार्य जारी है। निरीक्षण के दौरान सीएमओ सतीश मत्सेनिया,एसडीओ लोक निर्माण विभाग डीएस परमार भी सहित पुलिस विभाग के अधिकारी उपस्थित रहें।

यातायात पुलिस ने 39 वाहनों पर की चालानी कार्यवाही, वसूला 26 हजार समन शुल्क

बैतूल। यातायात पुलिस ने शहर के विभिन्न स्थानों पर चेकिंग अभियान चलाकर वाहनों के दस्तावेजों की जांच की और लापरवाही मिलने पर चालान बनाया। यातायात प्रभारी गजेंद्र कैन ने बताया कि गेंदा चौक, पेट्रोल पंप चौक एवं बस स्टैंड क्षेत्र में यात्री बसों, ऑटो, मैजिक एवं अन्य

सवारी वाहनों की सघन चेकिंग की गई। इस दौरान सभी वाहनों के दस्तावेज़ जैसे परमिट, फिटनेस, बीमा एवं ड्राइविंग लाइसेंस की जाँच की गई। साथ ही वर्षा ऋतु को दृष्टिगत रखते हुए विशेष रूप से वाइपर, इंडिकेटर, ब्रेक लाइट, हेड लाइट, फर्स्ट एड बॉक्स, अग्निशामक यंत्र, आपातकालीन दरवाजा एवं खिडक़ी काँच की स्थिति की भी जाँच की गई। इस दौरान बिना परमिट अथवा अपूर्ण दस्तावेज़ वाले ऑटो एवं मैजिक वाहनों को थाने में खड़ा कर चालानी कार्यवाही की गई। यात्री बसों में ड्राइवर के बिना वर्दी पाए जाने, वाइपर/इंडीकेटर/ब्रेक लाइट खराब होने, फर्स्ट एड बॉक्स एवं अग्निशामक यंत्र अनुपस्थित होने पर मौके पर ही चालानी कार्यवाही की गई। कार्रवाही के दौरान 23 बसों के चालान बनाये गये और 12,500 रूपये समन शुल्क वसूला गया। इसी तरह 7 ऑटो चालकों से 8,000, 4 कार चालान से 2,000, 2 मैजिक के चालान बनाकर 2,000 और 3 मोटरसाइकिलों के चालान बनाकर 1,500 रूपये कुल कुल 39 वाहनों पर चालानी कार्यवाही कर 26,000 का समन शुल्क वसूल किया गया। साथ ही सभी बस ड्राइवरों, कंडक्टरों एवं संचालकों को यह निर्देशित किया गया कि पात्रता से अधिक सवारियाँ न बैठाएँ।बसों की छत पर अतिरिक्त सामान न रखें। वाइपर, इंडिकेटर एवं ब्रेक लाइट हमेशा दुरुस्त रखें।

भवन बनाए आलीशान, पार्किंग से किया परहेज

पार्किंग नहीं होने से गली मोहल्लों में सडक़ों पर खड़े हो रहे वाहन

आमला। बीते लगभग डेढ़ दशकों में शहर में नए भवन निर्माण और वाहनों की संख्या तेजी से बढ़ी है, किंतु उस अनुपात में सकरी होती गलियां और सिमटती सडक़ों ने पूरे शहर में सुगम यातायात व्यवस्था के लिए एक समस्या पैदा कर दी है। अब इसे प्रशासन की लापरवाही कहें लोगों का गैर जिम्मेदार रवैया, किंतु शहर के ज्यादातर इलाकों में सिमटती सडक़ों ने हालात जरूर बिगाड़ दिए हैं। दरअसल बीते कुछ वर्षों में जिस तरह से इलाके में ज्यादातर दोपहिया वाहनों की संख्या तो जरूर बढ़ी है, किंतु इन बेतहाशा वाहनों को खड़े करने के लिए जगह नहीं है,ऐसे में वाहन मालिक अपने वाहनों को सडक़ों पर खड़ा करते हैं। जिससे शहर के ज्यादातर इलाकों में आवागमन को लेकर हालत बिगड़ रहे है या इसे यूं कहे कि ज्यादातर लोगों ने मकान तो आलीशान बना लिया है, किंतु मकानो में पार्किंग के लिए जगह नहीं छोड़ी हैं,जिससे शहर में बढ़ते बेतहाशा वाहनों को सडक़ों पर ही खड़ा किया जाता है। यहां ऐसे हालातों में शिकवे शिकायतों के बाद भी कार्यवाही नहीं होने से सडक़ों पर वाहन खड़े करने का चलन सा भी बन गया है।

हजार से ज्यादा वाहन सडक़ों पर- शहर में लगभग हजार से ज्यादा वाहन सडक़ों और गलियों में खड़े किए जाते हैं, जिससे आवागमन में लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, तो वहीं दुर्घटनाओं का भी अंदेशा रहता है। इसमें सुबह-सुबह स्कूल जाने वाले बच्चों के ऑटो, बस आदि वाहनों को ज्यादा दिक्कत होती है। यहां निजी भवनों की ही बात नहीं है, बल्कि शहर के अधिकांश शासकीय अशासकीय बैंकों में भी जहां प्रतिदिन सैकड़ो लोग आते हैं। ऐसी बैंकों के पास भी पार्किंग की कोई व्यवस्था नहीं है, इनमें भारतीय स्टेट बैंक, बैंक ऑफ़ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, नर्मदा बैंक, ग्रामीण सहकारी बैंक, आइसी आइसीआइ बैंक आदि शामिल है इन बैंकों के पास भी पार्किंग व्यवस्था नहीं होने से इन इलाकों में भारी समस्याएं होती है, और कई बार तो विवाद जैसे हालात भी बन जाते हैं।

मेंन रोड में यातायात व्यवस्था बदहाल

शहर के मुख्य बाजार के हालात भी कुछ ऐसे ही हैं, जहां सडक़ों तक पसरी दुकान और सडक़ों पर खड़े वाहनों से प्रतिदिन कई बार भारी जाम के हालात रहते हैं। स्थानीय प्रशासन की अनदेखी इन इलाकों में आवागमन के लिए कई समस्याएं पैदा कर रही हैं। इधर शनिवार को स्थानीय प्रशासन की एक बैठक में शहर की पार्किंग समस्या को देखते हुए नगर पालिका के द्वारा खाली पड़ी पुलिस विभाग की भूमि पर अस्थाई पार्किंग की व्यवस्था की गई है। यह पार्किंग व्यवस्था सभी के लिए पूरी तरह से निशुल्क रहेगी। उम्मीद जताई जा रही है कि प्रशासन की इस व्यवस्था से मेंन रोड, नगर पालिका के आसपास जैसे इलाकों में कुछ राहत लोगों को जरूर मिलने वाली है। गौरतलब है कि अभी कुछ दिन पहले ही यहां के व्यापारी संघ अध्यक्ष संजय साहू पत्रकार गुणवंत सिंह चड्ढा, दुर्गा प्रसाद जौजारे और राकेश शर्मा ने भी जिला पुलिस अधीक्षक निश्चल झरिया से मुलाकात कर पुलिस विभाग की खाली पड़ी भूमि को पार्किंग के लिए उपलब्ध कराने की मांग की थी।

इनका कहना है -

शहर में बिगड़ती यातायात व्यवस्था और पार्किंग की कमी के चलते बीते दिवस एसटीएम और पुलिस विभाग के साथ हुई बैठक में अस्थाई पार्किंग के लिए पुलिस विभाग द्वारा भूमि दी गई है। यह पार्किंग सभी के लिए पूरी तरह निशुल्क रहेगी। इसके बाद भी अगर कोई सडक़ों पर वहां खड़ा करता है तो दंडात्मक कार्यवाही भी की जाएगी।

-नितिन बिंजवे,
सीएमओ, नगरपालिका अधिकारी आमला

बायोस्टेट इंडिया कंपनी ने दस छात्रों को पच्चीस हज़ार रुपये की छात्रवृत्ति की वितरित

किसानों को जैविक खेती से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराई

बैतूल। बायोस्टेट इंडिया कंपनी के माध्यम से शनिवार को ग्राम पंचायत कोलगांव में जैविक खेती पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान किसान और कंपनी के बीच जैविक खेती के अंतर्गत क्या-क्या उगाया जा सकता है और फसलों को विभिन्न प्रकार के खरपतवारों और कीटनाशकों से कैसे बचाया जा सकता है, इस पर संवाद भी हुआ। यह संगोष्ठी बैतूल स्थित पटेल कृषि सेवा केंद्र बैतूल के माध्यम से आयोजित की गई। पटेल कृषि सेवा केंद्र सलीम पटेल, दादाजी कृषि सेवा केंद्र के संचालक बलराम साहू ने जानकारी देते हुए बताया कि संगोष्ठी के साथ-साथ कंपनी के माध्यम से ग्राम पंचायत कोलगांव क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

कोलगांव के दस उत्कृष्ट छात्रों को 25,000 रुपये की छात्रवृत्ति भी वितरित की गई। इस अवसर पर बायोस्टेट इंडिया लिमिटेड के प्रतिनिधि आकाश भरतपुरे, संजय माकोडे,राज मानकर ने उपस्थित किसानों को बताया कि बायोस्टेट इंडिया लिमिटेड कृषि आदानों और सेवाओं के क्षेत्र में एक अग्रणी कंपनी है जो किसानों को कीटनाशक, कवकनाशी, खरपतवारनाशी और जैव-उत्तेजक जैसे नवीन समाधान प्रदान करती है। यह 30 से अधिक वर्षों से स्थायी कृषि के क्षेत्र में सक्रिय है और भारत के साथ-साथ 22 से अधिक देशों में कृषक समुदायों का समर्थन करता है। कंपनी का उद्देश्य कृषि के माध्यम से मानवता की प्रगति को बढ़ावा देना है और यह वैश्विक स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद प्रदान करने के लिए उच्च सुरक्षा मानकों और आधुनिक विनिर्माण क्षमताओं का उपयोग करती है। कंपनी के माध्यम से निर्मित उत्पादों से किसानों को लाभ होता है। इस संगोष्ठी कार्यक्रम में कोलगांव पंचायत के सरपंच सरिताबाई वाडिवा उपसरपंच दिलीप बारपेठे, जिला जल संसाधन अधिकारी विपिन वामनकर, भूतपूर्व जनपद सदस्य रामकिशोर उइके, सांसद प्रतिनिधि उमेश लिल्हारे, कोलगांव हाई स्कूल के प्राचार्य एवं गांव के प्रतिष्ठित किसान उपस्थित थे।

समर्पण जागरण मंच द्वारा माटी गणेश सिद्ध गणेश घर घर गणेश, हर घर गणेश ,विराजे हर घर गणेश अभियान में कार्यशाला आयोजित

धार। समर्पण जागरण मंच द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं शुद्धता को लेकर माटी के गणेश जी निर्माण की कार्यशाला का आयोजन किया गया । मुख्य अतिथि के रुप मे एसडीओपी धामनोद मोनिका सिंह , विशेष अतिथि अभय किरकिरे वरिष्ठ समाज सेवी धार नालछा थाना प्रभारी कैलाश बारिया, सत्यनारायण पटेल, शंकरलाल कामदार भरत पटेल, ऋषिराज जायसवाल, अजय पाठक जनप्रतिनिधि कपिल चौधरी आदि विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मां भारती के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

इस अवसर पर एसडीओपी मोनिका सिंह द्वारा बच्चों को माटी के गणेश, सिद्ध गणेश अभियान के महत्व व हमारे द्वारा पर्यावरण की रक्षा भी हम कर सकते है छोटी-छोटी मूर्ति बनाकर हम समाज के बीच

अपनी कला का प्रदर्शन कर सकते हैं। वरिष्ठ समाजसेवी अभय किरकिरे द्वारा प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियां जल को प्रदूषित करती है एवं जल सूखने के बाद जनता के पैरों में आती है जिससे भगवान श्री गणेशजी का अपमान होता है। हमारी संस्कृति में मिट्टी के गणेश की पार्थिव पूजा होती है या सुपारी रखकर गणेशजी को पूजा जाता है प्रशिक्षक अभय किरकिरे द्वारा सभी को माटी के गणेश बनाने की विधि बताई गई। उपस्थित बच्चों द्वारा अपने अपने गांव में माटी के गणेश जी बनाकर स्थापित करवाए जिससे हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहे। इस अवसर पर पीएम श्री हाई स्कूल श्री गुरु कृपा हाई सेकेंडरी स्कूल आदर्श एकेडमी एंजल ऐकैडमी सरस्वती ज्ञान मंदिर क्रिएटिव ऐकैडमी के 200 बच्चों द्वारा माटी के गणेश जी बनाए। इस अवसर पर रोशन वर्मा ,गौरव वर्मा , धीरज वर्मा, अंशुल वर्मा, यश वर्मा, उज्जवल वर्मा , मोहित वर्मा लाखन पलसावदिया राजकुमार वर्मा विदुर चौधरी आयुष बावनिया गणेश सिसौदिया , हर्ष कामदार , उज्जवल पहलवान, रोहित वर्मा व शिक्षक स्कूल का स्टाफ उपस्थित रहा। संचालन हुकुमचंद कामदार ने किया। आभार निर्मल मण्डलोई ने किया ।

जन्मजात बहरेपन से जूझ रही नन्ही खुशी की जिंदगी में लौटी मुस्कान

धार। विकासखण्ड के ग्राम भमोरी पटेलपुरा की पाँच वर्षीय बच्ची खुशी गेहलोत अब सुन सकती है। जन्म से ही बाएं कान से बहरी खुशी का जीवन राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम और आयुष्मान भारत निरामयम योजना की मदद से पूरी तरह बदल गया है।खुशी के माता-पिता मजदूरी करते हैं और परिवार बेहद गरीब है। जब खुशी अपने गांव लौटी, तब आर.बी.एस.के. टीम ने आंगनवाड़ी केन्द्र पर उसके स्वास्थ्य परीक्षण में पाया कि बच्ची बाएं कान से ध्वनि सुनने में असमर्थ है। टीम ने माता-पिता को बताया कि बच्ची की सर्जरी संभव है और इसका पूरा खर्च शासन उठाएगा।

माता-पिता की सहमति के बाद खुशी को डीईआईसी सेंटर धार से चोइथराम अस्पताल इन्दौर भेजा गया। यहाँ डॉक्टरों ने बच्ची को Cochlear Implant Surgery के लिए चयनित किया। आयुष्मान भारत निरामयम योजना के अंतर्गत शासन से स्वीकृति मिलने पर 6 अगस्त 2025 को यह सर्जरी सफलता पूर्वक हुई। सर्जरी के बाद खुशी पूरी तरह स्वस्थ है और अब वह सामान्य बच्चों की तरह सुन सकती है। खुशी के माता-पिता ने कहा कि यदि शासन की यह योजना न होती तो उनके लिए ऑपरेशन कराना असंभव था।खुशी के परिवार ने स्वास्थ्य विभाग और म.प्र. शासन का आभार जताया। उन्होंने कहा कि ऐसी योजनाएँ गरीब परिवारों के लिए वरदान हैं।

हफ्ते में 36 घंटे उपवास करते हैं अक्षय

अक्षय कुमार हर हफ्ते रविवार रात को अपना अंतिम भोजन करते हैं और इसके बाद मंगलवार सुबह तक कुछ नहीं खाते। यानी लगभग 36 घंटे तक वह उपवास रखते हैं। इस दौरान वह सिर्फ पानी या कभी-कभी नारियल पानी ही लेते हैं। उनका मानना है कि इस तरह का उपवास शरीर को रुकने, आराम करने और खुद को रिपेयर करने का मौका देता है।

बॉलीवुड एक्टर अक्षय कुमार अपनी फिटनेस और अनुशासित जीवनशैली के लिए हमेशा चर्चा में रहते हैं। वह न सिर्फ वर्कआउट के प्रति समर्पित हैं, बल्कि अपने खान-पान और दिनचर्या को लेकर भी बेहद सख्त नियमों का पालन करते हैं। हाल ही में एक किताब 'योर बॉडी ऑलरेजी नोज' की लॉन्चिंग के दौरान अक्षय ने अपनी लाइफस्टाइल से जुड़ी कुछ अहम बातें साझा की, जिनमें सबसे दिलचस्प बात रही उनका हर सोमवार को उपवास रखना है। उन्होंने खुलासा किया वो 36 घंटे के करीब कुछ नहीं खाते पीते। इस प्रक्रिया को वो कैसे पूरा करते हैं, इस पर भी उन्होंने बात की। साथ ही फिटनेस के लिए कई और ट्रिप्स और ट्रिक्स भी साझा कीं।

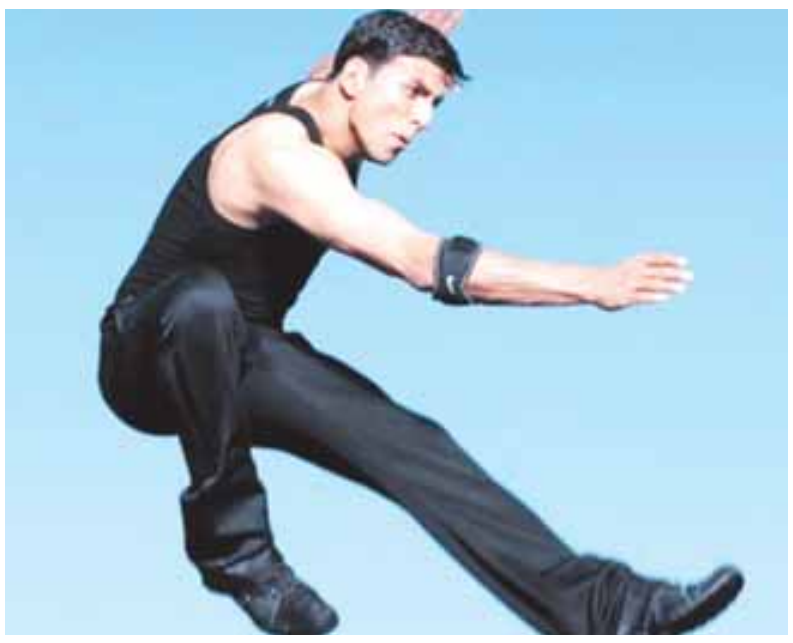

उन्होंने कहा, 'जब हम लगातार खाना खाते रहते हैं तो पेट को कभी आराम नहीं मिलता। लेकिन जब आप उसे कुछ घंटों के लिए खाली छोड़ते हैं तो वह खुद को हील करता है।' उनके उपवास के पीछे कोई धार्मिक नहीं बल्कि फिटनेस से जुड़े कारण अधिक हैं। अक्षय का मानना है कि आजकल अधिकतर बीमारियों की जड़ पेट है। गलत समय पर खाना, देर रात भोजन करना और बार-बार खाते रहना हमारी पाचन प्रक्रिया को नुकसान पहुंचाता है।

इसलिए वह न सिर्फ डिनर शाम 6-30 बजे तक कर लेते हैं, बल्कि हर सोमवार उपवास रखकर अपने शरीर को रीसेट करने का मौका भी देते हैं। उन्होंने इसे बहुत ही आसान भाषा में समझाते हुए कहा, 'सोचिए जब आप सोते हैं, तब शरीर के सभी अंग आराम कर रहे होते हैं, लेकिन पेट नहीं। अगर आप देर रात खाना खाते हैं तो सोते समय भी पेट काम कर रहा होता है। इससे न सिर्फ नींद खराब होती है, बल्कि पाचन भी।'

उन्होंने यह भी साफ किया कि यह उपवास कोई धार्मिक या पारंपरिक रीति नहीं, बल्कि एक हेल्थ प्रैक्टिस है। उनका उद्देश्य है शरीर को समय देना, ताकि वह खुद को डिटॉक्स कर सके। वे मानते हैं कि ऐसा करने से न केवल ऊर्जा बढ़ती है, बल्कि मानसिक स्पष्टता भी आती है। वर्कआउट की बात करें तो अक्षय पारंपरिक जिम की बजाय प्राकृतिक गतिविधियों पर भरोसा करते हैं।

वे रॉक क्लाइम्बिंग, स्विमिंग, रनिंग जैसे खेलों के जरिए खुद को फिट रखते हैं। उन्होंने मजाक में कहा कि उनका जिम बंदरों के लिए बना है, जहां सिर्फ लटकना और खेलना होता है, वेट लिफ्टिंग नहीं। अक्षय की ये जीवनशैली दिखाती है कि डिसिप्लिन और सही खान-पान से उम्र को मात देना मुमकिन है।

रियल बॉक्स

मां के सशक्त किरदार वाली ये यादगार फ़िल्में

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फिल्में बिना मां के किरदार के पूरी नहीं होती। मां के किरदार को फिल्मों में अलग-अलग तरह से पेश किया गया। कुछ अभिनेत्रियों ने मां के किरदार को इतनी बखूबी से निभाया कि परदे पर मां की बात हो, तो इनकी ही छवि उभरती है। यही मां फिल्म में कई बार कहानी में मोड़ लाने का भी काम करती है। याद करें तो मदर इंडिया, दीवार और 'वास्तव' ऐसी ही फ़िल्में हैं, जिन्हें मां की भूमिका के लिए ही याद किया जाता है। सिर्फ यही नहीं, ऐसी फिल्मों की फेहरिस्त बहुत लंबी है, जिनके कथानक में मां का किरदार कई बार नायक-नायिका से ज्यादा प्रभावशाली रहा। मां के कई यादगार किरदार है, जिसमें निरूपा रॉय, वहीदा रहमान, नरगिस, रीमा लागू, राखी, फरीदा जलाल और रेखा हैं। ये अभिनेत्रियां अपने अभिनय के लिए जानी जाती हैं। इनके अलावा दुर्गा खोटे ने भी ऑनस्क्रीन मां के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई। उन्होंने कई फिल्मों में मां का संवेदनशील किरदार निभाकर दर्शकों को प्रभावित किया फिल्मकारों ने मां के सशक्त किरदारों को अपनी फिल्मों में बखूबी तरीके से पेश किया। कई बार ऐसा भी हुआ कि मां के किरदार से ही फिल्में दर्शकों को आकर्षित करने में सफल रही हैं। कभी मां को समर्पित, कभी सकारात्मक, कभी संघर्षशील तो कभी दोस्ताना रूप में सिल्वर स्क्रीन पर इस किरदार को प्रस्तुत किया गया।

'मदर इंडिया' में नरगिस ने राधा का किरदार निभाया, जो एक मां है और अपने दोनों बेटों को बेहतर जीवन देने के लिए संघर्ष करती है। 'दीवार' में निरूपा रॉय ने एक ऐसी माँ का किरदार निभाया जो अपने बेटों के लिए सब कुछ करती है, पर एक बेटा रास्ता भटक जाता है। रीमा लागू ने भी ऐसी ही भूमिका 'वास्तव' में निभाई थी। वर्ष 1957 में आई फिल्म 'मदर इंडिया' में नरगिस की भूमिका का आज भी उल्लेख किया जाता है। फिल्म में नरगिस ने सुनील दत्त और राजेन्द्र कुमार की मां की भूमिका को जीवंत किया था। उन्होंने ऐसी मां का किरदार निभाया, जिसके हाथ अपने बेटे के अन्याय करने पर उसे जान से मारने से भी नहीं हिचकते। इस भूमिका के लिए नरगिस को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

ऐसे ही जब सिनेमा में मां के किरदार का जिक्र होता है, तो निरूपा रॉय के नाम को भुलाया नहीं जा सकता। उन्हें फिल्मों की आदर्श मां माना जाता है। उन्हें अमिताभ बच्चन की ऑनस्क्रीन मां भी कहा जाता है। क्योंकि, उन्होंने कई फिल्मों में अमिताभ की मां की भूमिका निभाई। दीवार, खून पसीना, मुकद्दर का सिकंदर, अमर अकबर एंथनी और 'सुहाग' जैसी फिल्मों में अमिताभ की मां का रोल निभाया। रेखा जैसी रोमांटिक अभिनेत्री ने भी कई फिल्मों में मां की भूमिका निभाई है, इनमें मुस्कुराहट, कोई मिल गया और 'सत्य और प्रेम' जैसी फिल्में शामिल हैं। फिल्मों में अभिनय करने वाली पहली मिस इंडिया नूतन ने भी कई फिल्मों में मां की भूमिका की। इनमें मेरी जंग, नाम, मुजरिम, युद्ध और 'कर्मा' जैसी फिल्में उल्लेखनीय हैं। 'मेरी जंग' में अपने सशक्त अभिनय के लिए नूतन को सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

जानी-मानी अभिनेत्री राखी ने भी कई फिल्मों में मां के चरित्र को साकार किया। यदि निरूपा रॉय को अमिताभ की मां कहा जाता है, तो राखी अनिल कपूर की फिल्मी मां थी। राम लखन, प्रतिकार, जीवन एक संघर्ष में राखी अनिल कपूर की मां बनी थीं। खलनायक, सोल्जर, बार्डर, करण-अर्जुन, बाजीगर और 'अनाड़ी' जैसी फिल्मों में राखी ने मां का किरदार निभाया। 'करण-अर्जुन' फिल्म में उनके मां के किरदार को लोग आज भी याद करते हैं। फिल्म में दुर्गा सिंह का किरदार निभाकर उन्होंने एक मां के अटूट विश्वास को पेश किया था। मां जिसे विश्वास होता है कि उसके बच्चे अपने पिता के हत्यारे से बदला लेने जरूर आएंगे। इन अभिनेत्रियों के अलावा 90 के दशक में रीमा लागू ने कई फिल्मों में इस किरदार को प्रभावशाली तरीके से पेश किया। इनमें रीमा लागू भी है, जिन्हें सलमान खान की मां के रूप में देखा गया है। इनमें मैने प्यार किया, साजन, हम साथ साथ हैं, जुड़वां' और 'पत्थर के फूल' जैसी सुपरहिट फिल्में शामिल हैं। उनकी मां की भूमिका वाली अन्य फिल्मों में कयामत से कयामत तक, आशिकी, हम आपके हैं कौन, कुछ कुछ होता है आदि शामिल हैं।

अचला सचदेव ने अपने करियर में कई फिल्मों मां और दादी का किरदार निभाया है। उन्हें इन्हीं किरदारों ने एक अलग पहचान दिलाई थी। उन्होंने 'कभी खुशी कभी गम' में शाहरुख खान और ऋतिक रोशन की दादी और 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' में काजोल की दादी का किरदार निभाते हुए भी देखा गया। दुर्गा खोटे ने जिस दौर में सिनेमा में कदम रखा, तब महिलाओं के किरदार भी पुरुष निभाया करते थे। दुर्गा खोटे ने कई फिल्मों मे मां का किरदार निभाकर अपनी एक अलग पहचान बनाई। कई फिल्मों में प्यार और दुलार से भरपूर मां का किरदार निभाया। ऋषि कपूर की फिल्म 'कर्ज' में इन्होंने मां का किरादर निभाकर उसे यादगार बना दिया। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' में काजोल की मां को याद किया जाए तो फरीदा जलाल आ जाती है। उन्होंने कई फिल्मों में कभी भावुक तो कभी हंसमुख और मजाकिया मां का किरदार निभाया है। कुछ कुछ होता है', 'कभी खुशी कभी गम', 'कहो ना प्यार है', जैसी कई फिल्मों में मां

का किरदार निभाकर लोगों का दिल जीता है।

चुलबुली नायिका की भूमिका निभाने से लेकर मां तक का किरदार निभाने में जया बच्चन का कोई सानी नहीं। उन्होंने 'हजार चौरासी की मां' में एक ऐसी मां का किरदार निभाया, जिसके बेटे को नक्सलियों ने मार दिया है। इसके बाद वह फिल्म 'कभी खुशी कभी गम' और 'कल हो ना हो' में भी मां का किरदार निभाती नजर आईं। 'कल हो ना हो' के लिए जया बच्चन को फिल्म फेयर अवार्ड भी मिला। मल्टीपर्पस रोल में किरण खेर ने भी कई भूमिकाएं निभाई। साथ ही मां की इमेज को बदलने में अहम भूमिका निभाई। फिल्म 'दोस्ताना' की कूल मदर हो या 'देवदास' की कठोर, स्वाभिमानी मां, किरण खेर ने हर भूमिका को जीवंत किया है। 'हम तुम' में उन्होंने एक ऐसी मां का किरदार निभाया, जो दोस्त से कम नहीं है। फिल्मों में कई अभिनेत्रियों ने मां के किरदार को रूपहले पर्दे पर निभाया। इनमें लीला चिटनिस, दुर्गा खोटे, दीना पाठक, वहीदा रहमान, आशा पारेख, हेमा मालिनी, रेखा, जया भादुड़ी, डिंपल कपाड़िया, रति अग्निहोत्री, किरण खेर और रेखा शामिल हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सभी को बाइसेक्शुअल बोलकर फंसी स्वरा

अपनी बेबाक हाजिर जवाबी को लेकर चर्चा में रहने वाली स्वरा भास्कर एक बार फिर लाइमलाइट में आ गई। अभिनेत्री स्वरा भास्कर अपने एक अटपटे बयान को लेकर सुर्खियों में हैं। हाल ही में सोशल मीडिया पर उनका एक इंटरव्यू काफी चर्चा में रहा। इसमें उन्होंने कहा कि हर कोई बाइसेक्शुअल है। इसके साथ ही उन्होंने समाजवादी पार्टी की सांसद डिंपल यादव पर अपना ऋश भी जाहिर किया। स्वरा भास्कर के इस बयान के बाद उन्हें सोशल मीडिया पर जबरदस्त आलोचना का सामना करना पड़ा।

लोगों ने एक्ट्रेस को जमकर ट्रोल किया और अब उन्होंने अलग अंदाज में पलटवार किया है और खुद को नया टैग भी दिया है। स्वरा के इस बयान का वीडियो, पांच महीने पुराना है और ये हाल ही में वायरल हुआ, जिसमें वे अपने पति और राजनेता फहाद अहमद के साथ नजर आ रही हैं। बातचीत के दौरान स्वरा ने कहा कि हेट्रोसेक्शुआलिटी कोई प्राकृतिक सच्चाई नहीं, बल्कि एक विचारधारा है जो सांस्कृतिक रूप से इंसानों पर थोपी गई है। उनका मानना है कि अगर लोगों को अपनी मर्जी से जीने दिया जाए तो ज्यादातर इंसान

बाइसेक्शुअल व्यवहार की ओर झुकेंगे। उन्होंने कहा था 'हम सभी बाइसेक्शुअल हैं। अगर आप लोगों को उनके हाल पर छोड़ दें तो हम असल में बाइसेक्शुअल हैं, लेकिन हेट्रोसेक्शुआलिटी एक विचारधारा है जो हजारों सालों से हमारे अंदर डाली गई है।'

इंटरव्यू के दौरान जब होस्ट ने उनसे पूछा कि उन्हें किस पर ऋश है तो स्वरा ने बेझिझक डिंपल यादव का नाम लिया और बताया कि हाल ही में उनसे मुलाकात भी हुई थी। इस बयान पर सोशल मीडिया में हलचल मच गई और कई यूजर्स ने उन्हें ट्रोल करना शुरू कर दिया। स्वरा ने इन आलोचनाओं का जवाब अपने अंदाज में दिया। उन्होंने 'एक्स' पर अपनी बायो को अपडेट करते हुए लिखा, 'गर्ल ऋश एडवोकेट। पार्ट टाइम एक्टर, फुल टाइम ट्विटर पर्सपेक्टिव। अराजकता की रानी। सर्वनाश के बीच अपनी राह तलाश रही हूं। फिलिस्तीन को आजाद करो।

उन्होंने एक पोस्ट में बायो बदलने की बात को मजाकिया अंदाज में कहा, 'सोचा कि बायो बदलने का समय आ गया है।' साथ ही उन्होंने 'गर्ल ऋश' की परिभाषा का एक स्क्रीनशॉट भी शेयर करते हुए लिखा, 'सच में ... इसमें बड़ी बात क्या है? फिलहाल, स्वरा अपने पति फहाद अहमद के साथ रियलिटी शो 'पति पत्नी और पंगा-जोड़ियों का रियलिटी चेक' में नजर आ रही हैं, जिसे मुनव्वर फारूकी और सोनाली बेंद्रे होस्ट कर रहे हैं। शो में कई सेलिब्रिटी जोड़ियां भाग ले रही हैं और रिश्तों की वास्तविकता को परखा जा रहा है। स्वरा और फहाद ने 6 जनवरी 2023 को विशेष विवाह अधिनियम के तहत शादी की थी और 16 फरवरी को इसका सार्वजनिक ऐलान किया था। दोनों ने सितंबर 2023 में अपनी बेटी राबिया का स्वागत किया।

'थामा' से लेकर 'परम सुंदरी' तक इस प्लेटफॉर्म पर

प्रोडक्शन हाउस मैडॉक फिल्म्स ने ओटीटी प्लेटफॉर्म प्राइम वीडियो से हाथ मिलाया है, जिसके तहत मैडॉक फिल्म्स की आने वाली 8 बड़ी फिल्मों को अब सिनेमाघरों में रिलीज होने के बाद अपने ओटीटी प्लेटफॉर्म प्राइम वीडियो पर दिखाया जाएगा. यह समझौता कई सालों के लिए किया गया है। प्राइम वीडियो में अपकमिंग फिल्म 'थामा' और दो चर्चित फिल्में देख सकते हैं।

इस लिस्ट में जाह्नवी कपूर और सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म 'परम सुंदरी' है, जो 29 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होने के बाद प्राइम वीडियो पर भी देखी जाएगी। इसके अलावा, दो लोकप्रिय फ्रैंचाइज़ी फिल्में 'शिद्दत 2' और 'बदलापुर 2' भी इस साझेदारी का हिस्सा हैं. इनके साथ ही श्रीराम राघवन द्वारा निर्देशित और अगस्त्य नंदा अभिनीत 'इक्कीस' भी प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम होगी. अन्य कई फिल्मों की घोषणा जल्द की जाएगी, जो इस साझेदारी को और रोमांचक बनाएंगी।

2025 से 2027 के बीच जो मैडॉक फिल्म्स की फिल्में सिनेमाघरों में रिलीज होंगी, वे बाद में पूरी दुनिया में सिर्फ प्राइम वीडियो पर दिखाई जाएंगी. ये फिल्में 240 से ज्यादा देशों में स्ट्रीम की जाएगी, जिससे इनकी पहुंच और भी बढ़ेगी। प्राइम वीडियो और मैडॉक फिल्म्स का रिश्ता पुराना और मजबूत है। दोनों ने मिलकर पहले भी स्त्री 2, तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया और 'स्त्री' जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्में दर्शकों तक पहुंचाई हैं। इसके अलावा, सह-निर्मित फिल्म 'भूल चूक माफ' और ओरिजिनल सीरीज 'जी करदा' ने भी दर्शकों का दिल जीता।

उन्होंने आगे कहा कि चाहे हमारी हॉरर-कॉमेडी यूनिवर्स हो या हमारी लोकप्रिय फ्रेंचाइजी फिल्में, हमारा हमेशा से मकसद ऐसी फिल्में बनाना रहा है, जिसे दर्शक बार-बार देखना पसंद करें। हमारी हॉरर-कॉमेडी यूनिवर्स और लोकप्रिय फ्रेंचाइजी की फिल्में अब सिनेमाघरों के बाद प्राइम वीडियो पर दुनियाभर के दर्शकों तक पहुंचेंगी।

इंदौर के मार्तण्ड चौक से मुंबई तक का सफर

अशोक जोशी

श्रद्धा सुमन
अच्युत पोतदार

अच्युत पोतदार का जन्म 22 अगस्त 1934 को जबलपुर में ब्रिटिश भारत में एक मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने अपना बचपन इंदौर में बिताया और 1961 में अर्थशास्त्र में प्रथम स्थान के साथ सातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और

विश्वविद्यालय पदक अर्जित किया। विश्वविद्यालय के बाद, वह रीवा में प्रोफेसर बन गए और बाद में भारतीय सेना में शामिल हो गए, जहां से वे 1967 में एक कप्तान के रूप में सेवानिवृत्त हुए। बाद में उन्होंने लगभग 25 वर्षों की अवधि के लिए इंडियन ऑयल के साथ एक कार्यकारी के रूप में काम किया और 1992 में 58 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त हुए।

कुछ लोग अभिनय के दीवाने होते हैं। उन्हें केवल अभिनय से मतलब होता है। नाम और दाम से उन्हें कोई लेना देना नहीं होता। वे खालिस कलाकार की कौम का प्रतिनिधित्व करते हैं । उनका यह कर्म उन्हें अपने क्षेत्र में स्थापित जरूर करता है। लेकिन, वह इसकी परवाह नहीं करते और समाज में घुलते मिलते रहकर, सामान्य व्यक्तियों की तरह अपना जीवन यापन करते हुए अभिनय कर्म से जुड़े रहते हैं और अभिनय करते करते ही इस दुनिया से चले जाते हैं।ऐसी ही एक शख्सियत के मालिक थे इंदौर की जड़ों से जुड़े अच्युत पोतदार जो मार्तण्ड चौक की गलियां से आगे बढ़कर अभिनय को पार्ट टाइम काम बनाकर एक ऐसे मकाम पर पहुंचे, जहां सफलता इंसान का सिर घुमा देती है। लेकिन, अच्चुत पोतदार हमेशा सड़क पर भीड़ में खड़े दिखाई दिए। बिना कोई हंगाम किए अपने जन्म दिन से दो दिन पहले इस दुनिया से रूखसत हो गए।

पोतदार परिवार में केवल अच्युत ही अभिनय से नहीं जुड़े थे। उनके छोटे भाई वसंत पोतदार भी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके दाए हाथ से कई काम सम्पन्न होते थे और अभिनय उनके बाएं हाथ का काम था। यायावर होने के नाते छोटे भाई ने अभिनय को कभी अपना व्यवसाय नहीं बनाया। घुमंतू पत्रकारिता में उन्होंने बहुत नाम कमाया। यहां तक कि उनकी एक रिपोर्ट ने इंदौर के एक राजनेता को मुख्यमंत्री बनते बनते रोक दिया। वसंत पोतदार की फिल्मी दुनिया में गहरी पहुंच थी। यारबाज होने के कारण उनकी दोस्ती भी सी रामचन्द्र, नाना पाटेकर, अमोल पालेकर और ओमपुरी जैसे यारबाज अभिनेताओं से थी।

यह दोस्ती केवल हाय हेलो की नहीं बल्कि साथ बैठकर खाने-पीने तक जारी थी।

बावजूद इसके उन्होंने कभी इन संबंधों को काम के लिए नहीं भुनाया। जब कोई दोस्त कहता तो किसी को भी पकड़कर इंदौर लाते और श्रीकृष्ण टॉकीज के सामने फुटपाथ पर बिछी अभ्यास मण्डल की दरी पर लाकर बिठा देते थे। बड़े भाई अच्युत पोतदार उनसे एक कदम आगे निकल गए। उन्होने भी काम तो कई बदले, लेकिन सिने जगत में लम्बे समय तक उस दौर में जमे रहे जिस दौर में अक्सर रिटायर होने की कामना करते हैं।

पोतदार इंडियन ऑयल में काम करते समय नाट्य कार्यक्रमों और नाटकों में भाग लेते थे और उनके सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मेजबानी भी करते थे।अभिनय के प्रति उनके जुनून ने उन्हें 1980 के दशक में फिल्मों और टेलीविजन की ओर खींचा, जिससे एक शानदार करियर की शुरुआत हुई जो चार दशकों से अधिक समय तक चला। उन्होंने ढलती उम्र में फिल्मों में कदम रखा और हिंदी और मराठी फिल्में मिलाकर

उन्होंने 125 मूवीज में काम किया था. उनकी फिल्मोग्राफी में आक्रोश, अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है, अर्ध सत्य, तेजाब, परिंदा, राजू बन गया जेंटलमैन, दिलवाले, रंगीला, वास्तव, हम साथ साथ हैं, परिणीता, लगे रहो मुन्ना भाई, दबंग 2 और वेंटिलेटर जैसी क्रिटिक्स द्वारा सराही गईऔर कमर्शियल सक्सेस फिल्में शामिल हैं।

अच्युत पोतदार ने अभिनय को एक गंभीर शौक के रूप मेंअपनाया। उन्होंने कभी किसी से भूमिकाएँ माँगने नहीं गए, बल्कि जो भी उन्हें मिला,वही किया। विधु विनोद चोपड़ा की फिल्मों में उनका किरदार लगभग तय हो चुका है।आज के दर्शक को अच्युत पोतदार,ये नाम सुनते ही सबसे पहले '3 इडियट्स' के प्रोफेसर की याद आती है। आमिर खान को क्लास से बाहर निकालने वाले प्रोफेसर के शानदार किरदार से अच्युत पोतदार दर्शकों के दिलों में अमर हो गए। इस फिल्म ने उन्हें वो पहचान दिलाई जिसे कोई कभी नहीं भूल पाएगा।

उनकी नवीनतम फिल्मों में दबंग 2 , फेरारी की सवारी और 3 इडियट्स शामिल हैं। उन्होंने सोनी एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड पर धारावाहिक अमिता का अमित में भी एक किरदार निभाया। लिमिटेड पोटदार ने टेलीविजन श्रृंखला प्रधान मंत्री में जयप्रकाश नारायण और आंदोलन में आज तक के चरित्र को भी चित्रित किया। मुंबई में कर्मक्षेत्र होने के बावजूद उन्हे वहां की भागदौड़ से परहेज रहा। यही कारण था कि मुंबई से दूर ठाणे में उन्होने अपना बसेरा बनाया और वहीं से वह काम के लिए मुंबई आते-जाते रहे। फिल्मी पार्टियों और चकाचौंध से दूर वे अपने परिवार और नाना पाटेकर जैसे खास दोस्तों के साथ देसी स्टाइल में अपना जीवन यापन करते रहे। इसलिए उन्हें भीड़ से कभी परहेज नहीं रहा। अक्सर वह मुंबई की खाऊ ठीयो, बाजारों और सब्जी मार्केट में स्वछंद विचरण करते दिखाई देते रहे।

उम्र के असर से वह भी प्रभावित हुए । इसीलिए चुनिंदा निर्देशकों तक उन्होंने अपने को सीमित कर लिया था। 18 अगस्त को अच्युत पोतदार का निधन हो गया. उन्होंने 91 साल की उम्र में दुनिया को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया. एक्टर की मौत उनके जन्मदिन से दो दिन पहले हुई. वो 22 अगस्त को इंदौर आकर अपना 92वां जन्मदिन मनाने वाले थे । लेकिन उन्होंने अपनी अंतिम यात्रा के लिए भी अपना कर्म स्थल ही चुनकर साबित कर दिया कि वह भीड़ में एक अलग जगह रखते थे।

जियो और... इन्हें भी जीने दो !

अधिकार

प्रकाश पुरोहित

घर के बाहर बच्चों का शोर था। कहीं से भटक कर 'पिल्ला' आ गया था! खास नस्ल का नहीं, सड़क वालों का जाया था, बिछड़ कर... और कूं-कूं कर रहा था! घर के बच्चे खुश थे उसे देख कर! एक-दो अंदर दौड़ गए और बिस्कुट ले आए, ब्रेड भी! उसने सूंघा और मुंह दूसरी तरफ कर लिया।

तभी घर से कोई बड़ा बाहर आया और बच्चों को डपटा 'क्या शोर मचा रखा है...!' देखा तो पिल्ला... और आसपास घर के बच्चे! बड़े ने घर का मेन-गेट बंद कर पिल्ले को बाहर कर दिया और बच्चों को अंदर जाने के लिए कहा! पिल्ला वहीं दरवाजे के बाहर 'कूं-कूं' कर रहा था और बच्चे भी अंदर नहीं जा रहे थे। लग रहा था, जैसे कोई जुड़ाव रोक रहा था उन्हें!

तभी घर से महिला बाहर आई... बिखरे बिस्कुट-ब्रेड देखा तो पूरा माजरा समझ आ गया। उसने बच्चों से कहा- 'बेटा, अभी ये बहुत छोटा है, खा नहीं पाएगा, दूध ही पी सकता है।' तो बच्चे, मां के पीछे पड़ गए 'दूध दो... दूध दो।' मां भी पिघल गई और प्लेट में दूध लाकर दे दिया। पिल्ला... दूध पीने लगा और बच्चे खुशी से ताली बजाने लगे।

पिंकी की बड़े दिनों से डिमांड थी 'बर्थ-डे पर पपी चाहिए', लेकिन उसे यह कह कर समझाया गया था कि पंद्रह बरस की हो जाओ, तब ला देंगे। यह परिवार या तो पशु-प्रेमी नहीं था... या फिर जानवरों की आजादी का हामी था? यहां कभी ना तो कुत्ता पाला गया, ना तोता, ना खरगोश या बिल्ली! नफरत किसी को नहीं थी पशु-पक्षियों से... लेकिन उनकी आजादी ज्यादा मायने रखती थी!

अब बड़ी समस्या थी..., पिल्ला... हटने को तैयार नहीं था गेट के सामने से... दूध का स्वाद लग गया था और बच्चे भी उसे छोड़ने को तैयार नहीं थे। घरवालों की बेचैनी बढ़ रही थी! तय किया कि पिल्ले को उठा कर कहीं छोड़ आएंगे, लेकिन बच्चे अड़ गए... रोने लगे! जिद पकड़ ली... 'पालेंगे, सारी शर्तें मंजूर!' इस दौरान उसको बार-बार पिल्ला कहना भी बच्चों को नागवार लग रहा था, सो नामकरण भी हो गया 'डूड।' घर बैठे आई मुसीबत का कोई हल नजर नहीं आ रहा था। बच्चे तो डूड को छोड़ने को तैयार नहीं थे! डूड तो कूं-कूं कर रहा था और बच्चे 'ऊं-ऊं' करने लगे! डूड की कूं-कूं या बच्चों के रोने से घर का मन थोड़ा बदला।

'शर्त यही रहेगी कि पिल्ला...'

'पिल्ला नहीं... डूड है इसका नाम!' पिंकी ने टोक दिया।

'हां, ये तुम्हारे डूड महाशय अब घर के अंदर नहीं आएंगे और मेन-गेट के आसपास ही रह सकेंगे।' बाल-सेना ने अपनी जीत पर एक-दूसरे को हाई-फाई किया!

... और इस तरह डूड की इस घर में... नहीं, बरामदे या मेन-गेट तक आमद हुई। बच्चों ने कितना समझा, यह तो वे ही जानें, डूड ने अपनी सीमा समझ ली थी। डूड के खाने-पीने यानी खिलाने-पिलाने पर कोई रोक-टोक नहीं थी! बच्चे कहीं ज्यादा खुश थे कि स्कूल जाते समय डूड से मिलते और बस से उतरते ही डूड की तरफ दौड़ पड़ते!

पिंकी ने तो ऐसा संभाला उसे कि डूड अब उसे देखते ही बावला हो जाता! बारी-बारी से सभी बच्चे डूड को खेलाते...! बगीचे में खेलने जाते तो उसे भी साथ ले जाते! डूड, उन बच्चों के बीच नेता या नायक की तरह चलता नजर आता! अब तो बगीचे में आने वाले बाकी बच्चे भी डूड से खेलने आने लगे। बच्चों में इन 'डूड वाले बच्चों' का दर्जा ऊंचा हो गया था। हर शर्त मान लेते थे बाकी बच्चे!

इस बात पर सभी गौर कर रहे थे कि अब 'डूड' सुनते ही वह दौड़ पड़ता था, जैसे मालूम हो कि उसका ही नाम डूड है। ऐसा नहीं... कि बच्चे ही उसे चाहते हों...! छोटे चाचा तो कभी-कभी छुपा कर अंडा भी खिला देते थे इस वैष्णवी घर के बरामदे में, जहां प्याज-लहसुन भी वर्जित था।

वक्त के साथ नाम तो 'डूड' ही रहा... लेकिन कद निकलने लगा और पूरी कॉलोनी को परिवार की तरह समझने लगा। इस घर पर तो उसका हक था, लेकिन मन होता तो कॉलोनी में निकल जाता...! वहां भी उसके चाहने वालों की कमी नहीं थी। वह कितना पहचानता था, यह तो पता नहीं... लेकिन अपना नाम उसे अच्छे से पता था। जहां से 'डूड' आवाज आती, उधर ही चला जाता!

खाना इसी घर में होता था..., उसके बर्तन दरवाजे के कोने पर रखे रहते। घूमता-फिरता आता, खाकर या तो बाहर ही पसर जाता, कभी कार के नीचे तो कभी पेड़ की छांह में! या दरवाजे पर दरबान की तरह डटा रहता!

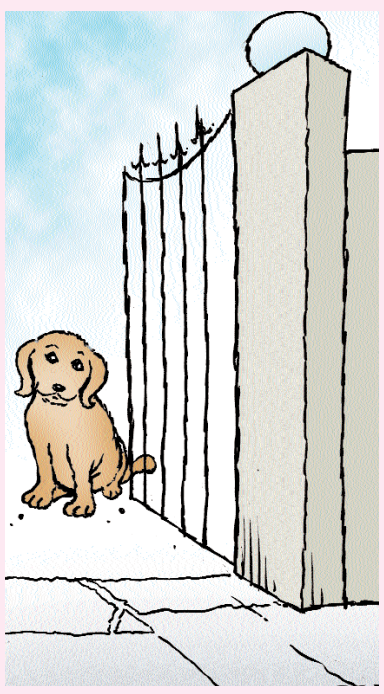

घरवालों को भी अचरज होता... कि अब तो इतना समय हो गया... लेकिन कभी उसने घर के अंदर झांक कर भी नहीं देखा। बाहर के कुछ बच्चे, जब उसे अंदर लाने लगे थे, तो छिटक कर भाग खड़ा हुआ था! कैसे समझ आ रहा था उसे कि यहां उसका 'प्रवेश-वर्जित' है! घर आने-जाने वालों को चेहरे से समझ लेता था... और अजनबी देख कर भी भोंकता नहीं था! हां, रात में जरूर कोई नया-अलग चेहरा यदि दरवाजे के पास आता तो जोर-जोर से भोंक कर बताने लगता कि कोई आ रहा है। इस दौरान न तो उसने किसी को पंजा मारा और ना ही किसी को दांत लगाए!

उम्र के अंतिम सिरे पर है डूड। थका-थका सा लगता है! यह घर ही नहीं, पूरी कॉलोनी उसका घर है! आज भी 'डूड' कहते ही उसकी पूंछ हिलकर कहने लगती है... 'पहचान रहा हूं।' उसके साथ तीन-चार दोस्त भी इस दौरान हो लिए हैं। 'डूड' की सोहबत में बाकी भी वैसे ही हो चले हैं... एकदम निरापद! इनसे कॉलोनी में न बच्चे डरते हैं, ना बड़े, बल्कि संगी-साथी जैसा रिश्ता है! लगभग हर घर से इन्हें खाना और प्यार मिलता है। बदले में ये भी कंजूसी नहीं करते हैं। जिम्मेदारी से रात भर पहरेदारी करते हैं। कॉलोनी में कभी चौकीदार की जरूरत ही महसूस नहीं हुई। पिंकी अब पंद्रह की हो रही है, लेकिन 'पपी' की चाहत फिलहाल नहीं है... कि 'डूड' है ना! जैसे डूड ने खाली जगह भर दी!

ये 'डूड-कथा' इसलिए याद आ गईं... कि क्या हम अपने आसपास ऐसे ही 'डूड' नहीं रख सकते हैं? क्या किसी कुत्ते को पागल कुत्ते ने काटा है कि चाहे जब काटने लगे या पीछा करने लगे... भौंकने लगे? ये तो जंगल में मजे में थे, हम ही इन्हें इंसानों के बीच लाए हैं तो क्या ये प्यार और देखभाल के हिस्सेदार भी नहीं हैं?

कभी कटोरदान में एक रोटी गाय... और एक रोटी कुत्ते की होती थी..., आज कितने घर हैं ऐसे? ये भी प्यार की बोली-भाषा समझते हैं...! पास आ रहे हैं, तो कभी सीटी बजाकर, प्यार से सहला तो दें... देखें... कैसे पूरा शरीर हिलने लगता है मारे खुशी के! घर में नहीं रखें, लेकिन अपने आसपास तो इन्हें रहने दें... इन्हें भी जीने का अधिकार है, जीने दें!

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

युवा पीढ़ी का शादी और बच्चों से इंकार क्यों?

आजकल 'समाज' और माता पिता चिंता के दौर से गुज़र रहे हैं बच्चे या तो शादी करना नहीं चाह रहे या बच्चे पैदा करना नहीं चाह रहे। चलो कुछ वजहे हम यूँ निकाल सकते हैं शायद उन्होंने अपने माता पिता या आस पास दम्पत्तियों के रिश्तों में बहुत टूट फूट देखी हो डाइवोर्स बढ़ रहे हैं कुल मिला कर रिश्तों में विश्वास नहीं, चूंकि अब दोनों कमाऊँ हैं तो अब दोनों को ही घर की, परिवार की, बच्चों की जिम्मेदारी उठानी होगी सारा झगड़ा इसी बात का है। इस बारे में मैंने लड़के लड़कियों जो शादीषुदा, बैचलर हैं उनसे बात की .....

लड़केः- जिस तरह माँ बाप लड़कियों की मर्जी के खिलाफ हो रहे हैं उसमें लड़कियाँ अपना बदला लड़के से निकालती हैं हाँ लवमैरिज में दोनों की रज़ामंदी होती है, पर फिर भी आजकल की लड़कियाँ बिजनेस मांइडेड, मनी मांइडेड हो रही हैं पैसे के लिये शादी के बाद भी वो परिवार बच्चे छोड़ दूसरों के साथ जा रही हैं। मेरे माता पिता को इज़्जत देना तो दूर पानी का गिलास भी नहीं देती अकेले रहना चाहती है, माँ बाप की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहती, खाना नहीं बनना चाहती रही बच्चों की बात, बच्चा पैदा करने से डरती हैं और वर्किंग होने की वजह से बच्चा संभालना नहीं चाहती।

लड़कीः- ऐसी बात नहीं है सब लड़कियाँ ऐसी नहीं होती कि साज़िशें करें। हम इतने भी मौका परस्त नहीं कि पैसे के लिये अपने रिष्ते गवाँ दें जब हम ऑफिस की जिम्मेदारी उठा रहे हैं तो घर की क्यों नहीं पर चूंकि हम दोनों वर्किंग हैं मैं भी घर के लिये काम करती हूँ शादी, मकान, कार की ई.एम.आई. दोनों को भरनी पड़ती है कभी कभी तो लगता है हम सारी ज़िंदगी ई.एम.आई. भरते रहेंगे बच्चे पैदा करने से हम नहीं डरते, हाँ जिम्मेदारी से डरते हैं वर्किंग होने पर बच्चे को देखने के लिये माता पिता को कष्ट देना मुझे अच्छा भी नहीं लगता हमारी प्रायवेसी भंग होती है ठीक है हमें भी सहायता की आवश्यकता होती है पर मुझे अपने घर में रोक टोक पसंद नहीं। दूसरे

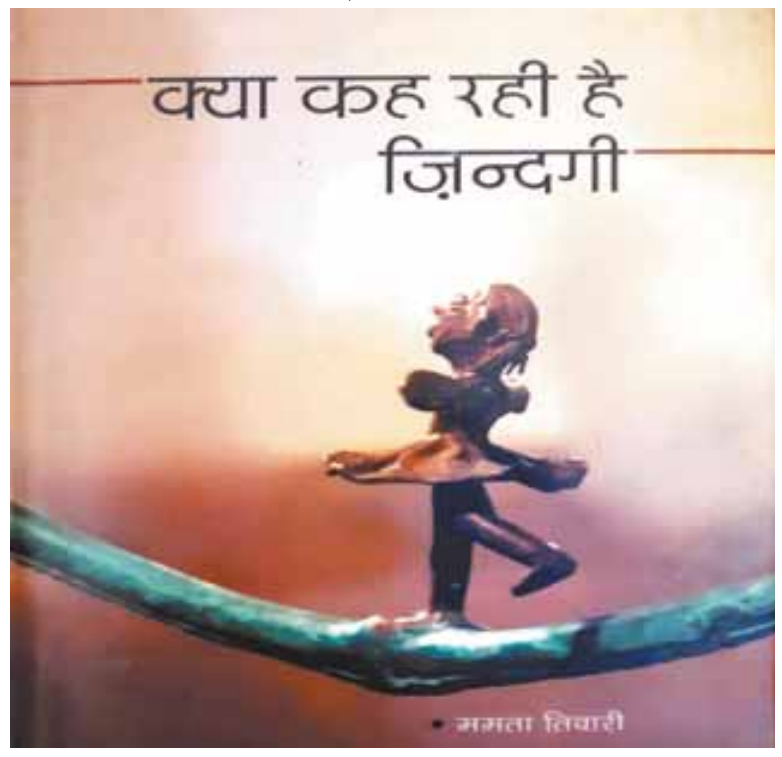

लड़के के माता पिता और मेरे माता पिता में भेदभाव किया जाता है। हम बच्चे के लिये भी सही समय का इंतज़ार कर रहे हैं हम पैसा जोड़ ले ताकि अपने बच्चे को वो लक्ज़री दे सकें जो हमें नहीं मिली।

मैं भौंचक भी थी, कही जगह सहमत तो कई जगह असहमत थी। फिर मैंने अपनी डॉ मित्र जो गाइनोकोलिजस्ट से बात की .....

मैंः- हमारे देश में शारीरिक वृद्धि के हिसाब से आप शादी की उम्र क्या मानती है।

डॉ मीता अग्रवालः- शादी की उम्र कानूनी रूप से लड़कियों के लिये 18 और लड़कों के लिये 21 होती है।

मैंः- और शारीरिक संबंधों के लिये ?

डॉ मीताः- देखिये हमारे यहाँ बालिग होने से पहले शारीरिक संबंध बनाना पौक्सो एक्ट के तहत अपराध की श्रेणी में आता है कई बार सहमति बनाये संबंध, बलात्कार में बदल जाते हैं अगर लड़की बालिग ना हो।

मैंः- हमारे यहाँ शादी तो सेक्स करने का सर्टिफिक्रेट है क्योंकि हमें ये ही बताया है कि शादी के बाद फिजिकल होना है।

डॉ मीताः- अब वो बात नहीं रही लोग शादी से पहले बालिग होने से पहले, लिव इन की सहमति मिलने के कारण पहले ही फिजिकल हो जाते हैं हमेशा ये जग जाहिर नहीं होता तो सेक्स अब कोई टैबू नहीं रहा।

मैंः- पर आप क्या सोचती हैं शारीरिक वृद्धि के हिसाब से ?

डॉ मीताः- देखिये लड़के 21 के बाद, लड़कियाँ 18 के बाद कभी शादी करें उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

मैंः- और बच्चे ?

डॉ मीताः- भारत में माँ बनने की उम्र 27 तक हो या देर से शादी में 34 तक।

मैंः- ऐसा क्यों ? विदेशों में या हमारे यहाँ फिल्म स्टार्स ने 39 तक बच्चे पैदा किये।

डॉ मीताः- हाँ ऐसा देखा गया है परंतु 34 की उम्र के बाद ओवम और स्पर्म बनने की रफ्तार, क्वालिटी कम होने लग जाती है कंसीव करने में परेशानी होती औरतों के मसल्स कड़क होने लगते हैं। नीदरलैंड में 28 साल है तो दक्षिण कोरिया में 37 साल है। आप सारी ज़िंदगी पैसा जोड़ने में लगे रहे या कोई ज़रूरी काम हो तो स्पर्म और ओवा फ्रीज करवा सकते हैं पर उसके लिये भी तो आपकी बॉडी तैयार होनी चाहिये अब आप उनका इस्तेमाल 45 वर्ष की आयु में करेंगे तो शायद आपका शरीर साथ ना दे शायद फिर आपको सरोगेसी की ज़रूरत पड़े।

तो कुल मिलाकर शादी बेशक आप अपनी मर्जी से करें आखिर आपके माँ बाप ने भी आपकी ज़िम्मेदारी उठाई है सो ज़िम्मेदारी से ना डरें रही बात बच्चों की तो शारीरिक अवस्था देख कर ही, बच्चे खुद की जिम्मेदारी पे करें। अगर करना है तो वक्त रहते बच्चे करें अगर जिम्मेदारी ना उठा सकें तो ना करें पर प्रेम से परिवार से पूछते रहे और क्या कह रही है ज़िंदगी ?

प्रकृति के प्रति कृतज्ञता जताने का उत्सव

लोक संस्कृति

बंशीलाल परमार

लेखक फोटोग्राफर एवं शिक्षक हैं।

इन दिनों में अपनी पुत्री के यहां जलगांव महाराष्ट्र प्रवास पर हूं। खानदेश की यह स्वर्ण नगरी हमारे रतलाम की तरह गोल्डन सीटी तो है ही साथ ही कई समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं का क्षेत्र भी है। अकसर इस उम्र में बाहर तब निकला जाता जब यहां कोई मार्गदर्शक हो और यह सौभाग्य सप्ताह में एक बार आता वो भी रविवार को। घर में बैठे-बैठे समय नहीं गुजरता। मेरे स्थानीय मित्र दिनेश चौधरी ने बातचीत में बताया कि पोला उत्सव है। उत्सव का नाम सुनते ही हमारे सामने गणेश उत्सव और नवरात्रि के गरबे का चित्र उभर आता है। आजकल इनके आयोजन की भव्यकता से भयभीत हो जाता हूं।

जब पता किया तो मालूम हुआ कि पोला उत्सव तो कृषि का त्योहार है जो बैल पूजा से जुड़ा है। गाय-बैल का जिक्र आते ही उनकी दुर्दशा की तस्वीर ही याद आ जाती है। मैंने पाया कि इस अंचल में जथा पशुधन का महत्व बना हुआ है कृषि में आज भी अधिक से अधिक बैलों का प्रयोग होता है। स्वाभाविक था कि उत्सव को देखने के लिए किसी गांव जाना होगा। उत्सव से अधिक गांव जाने की बात से मैं खुश हुआ क्योंकि उत्सव की औपचारिकताओं से परिचित हूं।

मैं इस उत्सव को देखने के लिए जलगांव से 15 किमी दूर कड़गांव गया। सारे गांव में घूमा, किसानों से बातचीत की तथा उनमें अपने पशुओं प्रति ऐसी श्रद्धा और प्रेम का वो भाव देखा जो हमारे मालवा में कल की बात हो चुकी है। पशुधन श्रद्धारहित पूजा तथा वोट व गोरक्षक प्रेम विभत्स रुप बन गया है। आज भी पशु गोबर से महंगे नहीं है।

पोला उत्सव भादवा माह की अमावस्या

को मनाया जाता है। यह पूर्णतः कृषि उत्सव है जिसमें मुख्य रुप बैलों की पूजा की जाती। साल भर खेतों में कड़ी मेहनत करने वाले अपने बैलों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं तथा सम्मान प्रकट करते हैं।

सजेधजे बैलों को जुलूस की शक्ल में गांव के मंदिर तक लाया जाता है। नारियल फोड़ कर घर वापस लाते हैं। घर के द्वार पर महिलाएं बैलों की पूजा अर्चना करती है तथा उन्हें पारंपरिक पकवान पूरण-पूडी, खिचड़ा, खीर, उड़द की दाल आदि खिलाए जाते हैं। यह उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का तरीका है। जिन घरों में बैल नहीं है, वहां मिट्टी के बैल बना कर पूजा जाता है। पूरे गांव में उत्साह सा वातावरण होता है। घर-द्वार पर सजे बैल दिखते हैं। इस दिन महाराष्ट्र में शासकीय अवकाश रहता है।

मैंने पाया कि पर्वों-उत्सवों को औपचारिकताओं से बचाना तथा उनके मूल उद्देश्यों से न भटकना ही त्यौहार की सार्थकता है।

खबर नहीं... संदेश बन जाए !

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

स्टैंड-अप कॉमेडी में शानदार कंटेट मौजूद है (इंदौर वाले जाकिर खान ने दुनिया में हिंदी और भारत का परचम लहराया है।) और ऐसे अनगिनत हैं, जिनके बारे में पता नहीं होता और सोशल मीडिया से खबर तक यूं छा जाते हैं कि जैसे बरसों से यहीं थे।

ऐसा ही नाम है आजकल खबर में छाया है- 'अय्यो श्रद्धा उर्फ श्रद्धा जैन।' वीडियो में 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' पर बात करती हैं और आज के हालात में वीडियो और गाने का हाल बताती हैं। 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' ऐसा गाना है, जिसे सुन कर बचपन में दूरदर्शन पर इस गाने में शामिल हर भाषा के हिस्से को बिना जाने याद कर लेना बड़ी बात नहीं थी, क्योंकि हर समय यह बजता ही रहता था। श्रद्धा जब कहती हैं कि मुझे भारत की हर भाषा की दो लाइन आती हैं, तब एहसास होता है कि वाकई जब टीवी पर बजते गाने के

साथ सुर मिला कर गाने की कोशिश करते थे, तब इस तरह से कभी सोचा ही नहीं था।

श्रद्धा कहती हैं कि आज के दौर में इस गाने को बनाना कितना मुश्किल होता, क्योंकि न जाने कितनों को दिक्कत आती कि हिंदी ज्यादा क्यों है या कम समय क्यों मिला, लेकिन उनकी इन बातों पर कुछ को बुरा लग गया और सोशल मीडिया पर बंटवारा हो गया। कई को लगा कि उनके हिंदी थोपे जाने के विरोध का मजाक उड़ाया जा रहा है, लेकिन क्या बात सिर्फ इतनी ही है?

किसी ने लिखा- 'श्रद्धा ने किसी को ठेस पहुंचाए बिना, बुरे शब्दों का इस्तेमाल किए बिना जरूरी संदेश दिया और उसे सरल और सहज रखा, शुक्रिया श्रद्धा! आप जैसे और कलाकारों की जरूरत है। कम से कम सोचने पर मजबूर किया।' दूसरे ने लिखा- 'सिर्फ श्रद्धा ही इस काम के साथ न्याय कर सकती थीं! गाना, समझाना, व्यंग्य करना और फिर भी सबसे कठिन 'भाषा' का इस्तेमाल करना, जिस पर भारतीय लड़ रहे हैं!' तीसरे ने लिखा- 'मैडम, मुझे खुशी है कि सिर्फ महाराष्ट्र का जिक्र नहीं किया... मैं हर भाषा की खूबसूरती समझता हूं, लेकिन हम जैसे के लिए भाषा को संवाद की तरह देखा जाता है और जब बात राज्य की आती है तो भाषा को उसकी गरिमा की तरह देखा जाता है...। आज जिस तरह से इसे बताया जाता है वह भले ही सही न हो, लेकिन हर राज्य हमेशा उस खोए सम्मान को वापस लाने की कोशिश करेगा। बस यही चाहता हूं कि सही तरीके का इस्तेमाल करें ताकि गलत न समझा जाए।'

कुछ ऐसे भी निकले, जिन्होंने कहा- 'वह गीत इस बात का सबूत था कि भारत सभी भाषाओं और उसके लोगों का सम्मान करता है, लेकिन उन पर हमला कर रही हैं, जो एक भाषा को दूसरी भाषा पर थोपने का विरोध करते हैं जहरीला!'

पूरे शो का खास मुद्दा है कि जब हिंदी थोपे जाने के विरोध की 'बेतुकी' बातों पर हंस लेते हैं तो ऐसे विरोध को गंभीरता से लेना मुश्किल हो जाता है। शायद सबसे छिपे तरीके से, स्टैंड-अप वाला हिस्सा बातचीत के मुद्दे का जाल बिछा देता है। श्रद्धा बेहतरीन मजेदार टैलेंटेड कॉमिक हैं और प्रतिभा को किस तरह इस्तेमाल करना है, यह भी जानती हैं, लेकिन कहीं न कहीं देखने-सुनने वालों की तरफ से ऐसी बातों को राजनीतिक या धार्मिक (कुणाल कामरा और मुनव्वर फारुकी) कवर चढ़ा देने से कॉमेडी की बातें खबर बन जाती हैं। ऐसे वक्त में हंसी की कीमत क्या है, बड़ा मसला बन जाता है।

श्रद्धा साफ-साफ कहती हैं कि हमें उस दौर के भारत से सीख लेने की जरूरत है लेकिन आहत होने वालों को यह बात समझ आ जाती तो भारत के सैकड़ों मसले न तो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे होते और न ही मीडिया में उन पर पर बात हो रही होती।